बना। परन्तु 'जाना' क्रिया के 'जा' धातु से 'जाया' नहीं वरन 'गया' होता है।

धातु यदि ईकारान्त और एकारान्त हो तो ईकार और एकार को इकार आदेश करके उसके आगे 'या' वा 'आ' के जोड़ने से सामान्यभूत की क्रिया बनती है; जैसे, 'जीना', 'पीना', 'सीना', 'लेना', 'देना', क्रियाओं के 'जी', 'पी', 'सी', 'ले', 'दे' धातुओं से 'जिया, 'जिआ;' 'पिया' 'पिआ;' 'सिया, 'सिआ;' 'लिया, 'लिआ;' दिया, 'दिआ;' बना।

धातु यदि ऊकरान्त और ओकारान्त हो तो उसके आगे 'या' वा 'आ' वा 'वा' के जोड़ने से सामान्यभूत की क्रिया बनती है; जैसे, 'चूना', 'छूना', 'सोना', 'रोना', 'धोना' 'बोना' क्रियाओं के 'चू', 'छू', 'सो', 'रो', 'धो', 'बो' धातुओं से 'चूया' 'चूआ, 'चूवा'; 'छूया' 'छूआ' 'छूवा;' 'सोया' 'सोआ' 'सोवा;' 'रोया,' 'रोआ', 'रोवा'; 'धोया, धोआ, धोवा'; 'बोया, बोआ, 'बोवा' बना। परन्तु होना क्रिया के 'हो' धातु से 'हुआ, हुआ, हुवा' बनता है।

☞ देशभेद के उच्चारण में भेद पड़ता है; जैसे, कोई कहता है 'धोया'; कोई 'धोआ'; और कोई 'धोवा' इत्यादि।

(च) सामान्यभूत की क्रिया के आगे विभक्तियों के जोड़ने से आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत की क्रियायें बनती हैं; जैसे, लिखा है, लिखा था, लिखा होगा, इत्यादि।

५ धातु में विभक्तियों के जोड़ने से विधि, सम्भावना, भविष्यकाल की और पूर्वकालिक क्रियायें बनती हैं; जैसे, लिख, लिखे, लिखेगा, लिख के इत्यादि।

(अ) लेना, देना और होना इन क्रियाओं की विधि दो रूप से आती है; जैसे, लो और लेओ, दो और देओ, हो और होओ; लूं और लेऊं, दूं और देऊं, हूं और होऊं इत्यादि।

पाठ १८। विभक्तिचक्र

धातुओं में जिन चिह्नों के योग से उनके लिङ्ग पुरुष वचन की भिन्न २ अवस्थायें जानी जाती हैं उनको विभक्ति कहते हैं। ये विभक्तियां या तो धातुओं से परे संयोग पाती हैं या उनका धातु के अन्त्य अकार के स्थान में आदेश होता है।

विभक्तिचक्र नीचे लिखा जाता है—

हेतुहेतुमद्भूत

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ता	ते	उत्तमपुरुष	ती	तीं
मध्यमपुरुष	ता	ते	मध्यमपुरुष	ती	तीं
अन्यपुरुष	ता	ते	अन्यपुरुष	ती	तीं

सामान्यवर्त्तमान

पुं०	ए० व०	ब० व०	स्त्री०	ए० व०	ब० व०
उ० पु०	ता हूं	ते हैं	उ० पु०	ती हूं	ती हैं
म० पु०	ता है	ते हो	म० पु०	ती है	ती हो
अ० पु०	ता है	ते हैं	अ० पु०	ती है	ती हैं

☞ सन्दिग्धवर्त्तमान और सन्दिग्धभूत, म० पु० व अ० पु०, ए०व०, पुं० में ता, आ वा या होगा, होयगा, होयेगा, होएगा, होवेगा वा होवैगा और स्त्री० में ती, ई वा यी होगी, होयगी, होयेगी, होएगी, होवेगी वा होवैगी—उ० पु० व अ० पु०, ब० व०, पुं० में ते, ए वा ये होंगे, होयंगे, होयेंगे, होएंगे, होवेंगे वा होवैंगे और स्त्री० में ती, ई वा यी होंगी होयंगी, होयेंगी, होएंगी, होवेंगी वा होवैंगी—ये छ छ प्रकार की विभक्तियां धातुओं से परे आती हैं। रूपावली में सन्दिग्धवर्त्तमान और सन्दिग्धभूत कालों में धातु से परे जहां ये विभक्तियां न लगाई गई हों वहां इनको जोड़ के क्रिया के रूप कह लेना होगा॥

सन्दिग्धवर्त्तमान

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ता हूंगा वा होऊंगा	ते होंगे वा होवेंगे
मध्यमपुरुष	ता होगा वा होवेगा	ते होगे वा होओगे
अन्यपुरुष	ता होगा वा होवेगा	ते होंगे वा होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ती हूंगी वा होऊंगी	ती होंगी वा होवेंगी
मध्यमपुरुष	ती होगी वा होवेगी	ती होगी वा होओगी
अन्यपुरुष	ती होगी वा होवेगी	ती होंगी वा होवेंगी

अपूर्णभूत

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ता था	ते थे	उत्तमपुरुष	ती थी	ती थीं
मध्यमपुरुष	ता था	ते थे	मध्यमपुरुष	ती थी	ती थीं
अन्यपुरुष	ता था	ते थे	अन्यपुरुष	ती थी	ती थीं

सामान्यभूत

पुं०	ए०व०	ब०व०	स्त्री०	ए०व०	ब०व०
उ०पु०	आ वा या	ए वा ये	उ०पु०	ई वा यी	ईं वा यीं
म०पु०	आ वा या	ए वा ये	म०पु०	ई वा यी	ईं वा यीं
अ०पु०	आ वा या	ए वा ये	अ०पु०	ई वा यी	ईं वा यीं

आसन्नभूत

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	आ है, या है वा या हूं	ए हैं वा ये हैं
मध्यमपुरुष	आ है वा या है	ए हो वा ये हो
अन्यपुरुष	आ है वा या है	ए हैं वा ये हैं

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ई है, यी है वा यी हूं	ई हैं वा यी हैं
मध्यमपुरुष	ई है वा यी है	ई हो वा यी हो
अन्यपुरुष	ई है वा यी है	ई हैं वा यी हैं

पूर्णभूत

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	आ था वा या था	ए थे वा ये थे
मध्यमपुरुष	आ था वा या था	ए थे वा ये थे
अन्यपुरुष	आ था वा या था	ए थे वा ये थे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ई थी वा यी थी	ई थीं वा यी थीं
मध्यमपुरुष	ई थी वा यी थी	ई थीं वा यी थीं
अन्यपुरुष	ई थी वा यी थी	ई थीं वा यी थीं

सन्दिग्धभूत

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	आ वा या हूंगा वा होऊंगा	ए वा ये होंगे वा होवेंगे
मध्यमपुरुष	आ वा या होगा वा होवेगा	ए वा ये होगे, होओगे वा होवोगे
अन्यपुरुष	आ वा या होगा वा होवेगा	ए वा ये होंगे वा होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ई वा यी हूंगी वा होऊंगी	ई वा यी होंगी वा होवेंगी
मध्यमपुरुष	ई वा यी होगी वा होवेगी	ई वा यी होगी वा होओगी वा होवोगी
अन्यपुरुष	ई वा यी होगी वा होवेगी	ई वा यी होंगी वा होवेंगी

विधि		सम्भावना	
पुं० ए० व०	ब० व०	पुं० ए० व०	ब० व०
उ० पु० ऊं	यं, यें, एं, वें वा वैं	उ० पु० ऊं	यं, यें, एं, वें वा वैं
म० पु० ०	ओ वा वो	म० पु० य, ये, ए, वे वा वै	ओ वा वो
अ० पु० य, ये, ए, वे वा वै।	यं, यें, एं, वें वा वैं	अ० पु० य, ये, ए, वे वा वै	यं, यें, एं, वें वा वैं

☞ विधि और सम्भावना में पुंलिङ्गवों की विभक्तियां स्त्रीलिङ्ग में भी आती हैं।

आदरसूचकविधि 'इये' वा 'इए'। परोक्षसूचकविधि 'इयो' वा 'इओ'

भविष्य

पुं० एकवचन	बहुवचन
उ०पु० ऊंगा	यंगे, येंगे, एंगे, वेंगे वा वैंगे
म०पु० यगा, येगा, एगा, वेगा वा वैगा	ओगे वा वोगे
अ०पु० यगा, येगा, एगा, वेगा वा वैगा।	यंगे, येंगे, एंगे, वेंगे वा वैंगे

—:०:—

स्त्री० एकवचन	बहुवचन
उ०पु० ऊंगी	यंगी, येंगी, एंगी वेंगी वा वैंगी
म०पु० यगी, येगी, एगी, वेगी वा वैगी	ओगी वा वोगी
अ०पु० यगी, येगी, एगी, वेगी वा वैगी	यंगी, येंगी, एंगी, वेंगी वा वैंगी

पूर्वकालिक

के, कर वा करके

पाठ ११। धातुरूपावली

अकर्मक क्रिया 'होना'—धातु 'हो'।

हेतुहेतुमद्भूत काल ।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होता	हम होते
मध्यमपुरुष	तू होता	तुम होते
अन्यपुरुष	वह होता	वे होते

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होती	हम होतीं
मध्यमपुरुष	तू होती	तुम होतीं
अन्यपुरुष	वह होती	वे होतीं

सामान्यवर्त्तमान काल ।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होता हूं	हम होते हैं
मध्यमपुरुष	तू होता है	तुम होते हो
अन्यपुरुष	वह होता है	वे होते हैं

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होती हूं	हम होती हैं
मध्यमपुरुष	तू होती है	तुम होती हो
अन्यपुरुष	वह होती है	वे होती हैं

सन्दिग्धवर्त्तमान काल ।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होता हूंगा या होऊंगा	हम होते होंगे या होवेंगे
मध्यमपुरुष	तू होता होगा या होवेगा	तुम होते होगे, होओगे या होवोगे
अन्यपुरुष	वह होता होगा या होवेगा	वे होते होंगे या होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होती हूंगी या होऊंगी	हम होती होंगी या होवेंगी
मध्यमपुरुष	तू होती होगी या होवेगी	तुम होती होंगी या हो-ओगी या होवोगी
अन्यपुरुष	वह होती होगी या होवेगी	वे होती होंगी या होवेंगी

अपूर्णभूत काल।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होता था	हम होते थे
मध्यमपुरुष	तू होता था	तुम होते थे
अन्यपुरुष	वह होता था	वे होते थे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होती थी	हम होती थीं
मध्यमपुरुष	तू होती थी	तुम होती थीं
अन्यपुरुष	वह होती थी	वे होती थीं

सामान्यभूत काल।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुआ	हम हुए
मध्यमपुरुष	तू हुआ	तुम हुए
अन्यपुरुष	वह हुआ	वे हुए

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुई	हम हुईं
मध्यमपुरुष	तू हुई	तुम हुईं
अन्यपुरुष	वह हुई	वे हुईं

आसन्नभूत काल।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुआ हूँ	हम हुए हैं
मध्यमपुरुष	तू हुआ है	तुम हुए हो
अन्यपुरुष	वह हुआ है	वे हुए हैं

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुई हूँ	हम हुई हैं
मध्यमपुरुष	तू हुई है	तुम हुई हो
अन्यपुरुष	वह हुई है	वे हुई हैं

पूर्णभूत काल

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुआ था	हम हुए थे
मध्यमपुरुष	तू हुआ था	तुम हुए थे
अन्यपुरुष	वह हुआ था	वे हुए थे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुई थी	हम हुई थीं
मध्यमपुरुष	तू हुई थी	तुम हुई थीं
अन्यपुरुष	वह हुई थी	वे हुई थीं

सन्दिग्धभूत काल।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुआ हूँगा या होऊंगा	हम हुए होंगे या होवेंगे
मध्यमपुरुष	तू हुआ होगा या होवेगा	तुम हुए होगे, होओगे या होवोगे
अन्यपुरुष	वह हुआ होगा या होवेगा	वे हुए होंगे या होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं हुई हूँगी या होऊंगी	हम हुई होंगी या होवेंगी
मध्यमपुरुष	तू हुई होगी या होवेगी	तुम हुई होंगी, होओगी या होवोगी
अन्यपुरुष	वह हुई होगी या होवेगी	वे हुई होंगी या होवेंगी

विधिक्रिया।

पुं० व स्त्री०	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होऊं	हम होयं, होयें, होएं, होवें या होवैं
मध्यमपुरुष	तू हो	तुम हो, होओ या होवो
अन्यपुरुष	वह होय, होये, होए, होवे या होवै	वे होयं, होयें, होएं, होवें या होवैं

आ० सू० विधि-पु० या स्त्री० होइये वा होइए या हूजिये वा हूजिए

ए० सू० विधि पु० या स्त्री० होइयो, होइओ या हूजियो, हूजिओ

संभावना क्रिया।

पुं० व स्त्री०	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं होऊं	हम होयं, होयें, होएं, होवें या होवैं
मध्यमपुरुष	तू होय, होये, होए, होवे या होवै	तुम होओ या होवो
अन्यपुरुष	वह होय, होये, होए, होवे या होवै	वे होयं, होयें, होएं, होवें या होवैं

भविष्य काल।

पुं०	एकवचन	बहुवचन
उ०पु०	मैं होऊंगा	हम होयंगे, होयेंगे, होएंगे, होवेंगे या होवैंगे

म०पु० तू होयगा, होयेगा, हो-एगा, होवेगा या होवैगा	तुम होओगे या होवोगे
अ०पु० वह होयगा, होयेगा, हो-एगा, होवेगा या होवैगा	वे होयंगे, होयेंगे, हो-एंगे, होवेंगे या होवैंगे

स्त्री० एकवचन	बहुवचन
उ०पु० मैं होऊंगी	हम होयंगी, होयेंगी, हो-एंगी, होवेंगी या होवैंगी
म०पु० तू होयगी, होयेगी, हो-एगी, होवेगी या होवैगी	तुम होओगी या होवोगी
अ०पु० वह होयगी, होयेगी, हो-एगी होवेगी, या होवैगी,	वे होयंगी, होयेंगी, होएंगी, होवेंगी या होवैंगी

पूर्वकालिक क्रिया।

हो के, हो कर या हो करके

☞ सहकारी क्रिया 'होना' के रूप भूत, वर्त्तमान और भविष्य कालों में।

भूतकाल

पुं० एकवचन	बहुवचन	स्त्री ए०व०	ब०व०
उ०पु० मैं हुआ	हम हुए	उ०पु० मैं हुई	हम हुईं
म०पु० तू हुआ	तुम हुए	म०पु० तू हुई	तुम हुईं
अ०पु० वह हुआ	वे हुए	अ०पु० वह हुई	वे हुईं

वर्त्तमान काल।

पुंलिङ्ग ए०व०	ब०व०	स्त्रीलिङ्ग ए०व०	ब०व०
उत्तमपु० मैं हूं	हम हैं	उत्तमपु० मैं हूं	हम हैं
मध्यमपु० तू है	तुम हो	मध्यमपु० तू है	तुम हो
अन्यपु० वह है	वे हैं	अन्यपु० वह है	वे हैं

भविष्य काल ।

पुं० एक०	ब० व०	स्त्री० एक०	ब० व०
उ० पु० मैं हूंगा	हम होंगे	उ० पु० मैं हूंगी	हम होंगी
म० पु० तू होगा	तुम होंगे	म० पु० तू होगी	तुम होगी
अ० पु० वह होगा	वे होंगे	अ० पु० वह होगी	वे होंगी

अकर्मक क्रिया 'जाना'—धातु 'जा'

हेतुहेतुमद्भूतकाल ।

पुं० एक०	ब० व०	स्त्री एक०	ब० व०
उ० पु० मैं जाता	हम जाते	उ० पु० मैं जाती	हम जातीं
म० पु० तू जाता	तुम जाते	म० पु० तू जाती	तुम जातीं
अ० पु० वह जाता	वे जाते	अ० पु० वह जाती	वे जातीं

सामान्यवर्त्तमान काल ।

पुं० एक०	ब० व०	स्त्री एक०	ब० व०
उ० पु० मैं जाता हूं	हम जाते हैं	उ० पु० मैं जाती हूं	हम जाती हैं
म० पु० तू जाता है	तुम जाते हो	म० पु० तू जाती है	तुम जाती हो
अ० पु० वह जाता है	वे जाते हैं	अ० पु० वह जाती है	वे जाती हैं

सन्दिग्धवर्त्तमान काल ।

पुं० एक०	ब० व०
उ० पु० मैं जाता हूंगा या होऊंगा	हम जाते होंगे या होवेंगे
म० पु० तू जाता होगा या होवेगा	तुम जाते होगे, होओगे या होवोगे
अ० पु० वह जाता होगा या होवेगा	वे जाते होंगे या होवेंगे

स्त्री०	ए०व०	ब०व०
उ०पु०	मैं जाती हूंगी या होऊंगी	हम जाती होंगी या होवेंगी
म०पु०	तू जाती होगी या होवेगी	तुम जाती होगी, होओगी या होवोगी
अ०पु०	वह जाती होगी या होवेगी	वे जाती होंगी या होवेंगी

अपूर्णभूत काल ।

पुं०	ए०व०	ब०व०	स्त्री०	ए०व०	ब०व०
उ०पु०	मैं जाता था	हम जाते थे	उ.पु.	मैं जाती थी	हम जाती थीं
म०पु०	तू जाता था	तुम जाते थे	म.पु.	तू जाती थी	तुम जाती थीं
अ.पु.	वह जाता था	वे जाते थे	अ.पु.	वह जाती थी	वे जाती थीं

सामान्यभूत काल ।

☞ पुंलिङ्ग ब० व० में गये वा गए और स्त्रीलिङ्ग ए०व० में गयी वा गई, ब० व० गयीं वा गईं सर्वत्र जानो ।

पुं०	ए० व०	ब० व०	स्त्री०	ए०व०	ब० व०
उ०पु०	मैं गया	हम गये	उ०पु०	मैं गई	हम गईं
म०पु०	तू गया	तुम गये	म०पु०	तू गई	तुम गईं
अ०पु०	वह गया	वे गये	अ०पु०	वह गई	वे गईं

आसन्नभूत काल ।

पुं०	ए०व०	ब०व०	स्त्री०	ए०व०	ब०व०
उ०पु.	मैं गया हूं	हम गये हैं	उ०पु०	मैं गई हूं	हम गई हैं
म पु.	तू गया है	तुम गये हो	म०पु०	तू गई है	तुम गई हो
अ.पु.	वह गया है	वे गये हैं	अ०पु०	वह गई है	वे गई हैं

पूर्णभूत काल ।

पुं०	ए०व०	ब०व०	स्त्री०	ए०व०	ब०व०
उ.पु.	मैं गया था	हम गये थे	उ.पु.	मैं गई थी	हम गई थीं
म.पु.	तू गया था	तुम गये थे	म.पु.	तू गई थी	तुम गई थीं
अ.पु.	वह गया था	वे गये थे	अ.पु.	वह गई थी	वे गई थीं

सन्दिग्धभूत काल ।

पुं०	ए०व०	ब०व०
उ०पु०	मैं गया हूंगा या होऊंगा	हम गये होंगे या होवेंगे
म०पु०	तू गया होगा या होवेगा	तुम गये होगे, होओगे या होवोगे
अ०पु०	वह गया होगा या होवेगा	वे गये होंगे या होवेंगे

स्त्री०	ए०व	ब०व०
उ०पु०	मैं गई हूंगी या होऊंगी	हम गई होंगी या होवेंगी
म०पु०	तू गई होगी या होवेगी	तुम गई होंगी, होओगी या होवोगी
अ०पु०	वह गई होगी या होवेगी	वे गई होंगी या होवेंगी

विधिक्रिया ।

पु० व स्त्री०	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपु०	मैं जाऊं	हम जायं
मध्यमपु०	तू जा	तुम जाओ वा जावो
अन्यपु०	वह जाय	वे जायं

आदरसूचक विधि-पु० या स्त्री० जाइये वा जाइए

परोक्षसूचक विधि-पु० या स्त्री० जाइयो वा जाइओ

संभावनाक्रिया।

पु० व स्त्री०	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपु०	मैं जाऊं	हम जायं, जायें, जाएं, जावें या जावें
मध्यमपु०	तू जाय, जाये, जाए, जावे या जावै	तुम जाओ या जावो
अन्यपु०	वह जाय, जाये, जाए, जावे या जावै	वे जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं

भविष्यकाल।

पुंलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपु०	मैं जाऊंगा	हम जायंगे, जायेंगे, जाएंगे, जावेंगे या जावैंगे
मध्यमपु०	तू जायगा, जायेगा, जाएगा, जावेगा या जावैगा	तुम जाओगे या जावोगे
अन्यपु०	वह जायगा, जायेगा, जाएगा, जावेगा या जावैगा	वे जायंगे, जायेंगे, जाएंगे, जावेंगे या जावैंगे

—...—

स्त्रीलिङ्ग	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपु०	मैं जाऊंगी	हम जायंगी, जायेंगी, जाएंगी, जावेंगी या जावैंगी
मध्यमपु०	तू जायगी, जायेगी, जाएगी, जावेगी या जावैगी	तुम जाओगी, जावोगी

अन्यपु० वह जायगी, जायेगी, जाएगी, जावेगी या जावैगी वे जायंगी, जायेंगी, जाएंगी, जावेंगी या जावैंगी

पूर्वकालिकक्रिया ।

जा के, जा कर या जा करके

कर्तृप्रधान अकर्मक क्रिया 'बैठना' के रूप

☞ (एकवचन) उ० पु० 'मैं', म० पु० 'तू', अ० पु० वह; (बहुवचन) उ०पु० 'हम', म०पु० 'तुम', अ०पु० 'वे' सर्वत्र जानो।

सामान्यवर्त्तमानकाल ।

पु० मैं बैठता हूं; तू, वह—बैठता है। हम बैठते हैं, तुम बैठते हो, वे बैठते हैं। स्त्री० मैं बैठती हूं; तू, वह—बैठती है। हम बैठती हैं, तुम बैठती हो, वे बैठती हैं।

सन्दिग्धवर्त्तमानकाल ।

पुं० मैं बैठता हूंगा या होऊंगा; तू, वह—बैठता होगा या होवेगा। हम बैठते होंगे या होवेंगे, तुम बैठते होगे या होओगे या होवोगे, वे बैठते होंगे या होवेंगे।

स्त्री० मैं बैठती हूंगी या होऊंगी; तू वह—बैठती होगी या होवेगी। हम बैठती होंगी या होवेंगी; तुम बैठती होगी, होओगी या होवोगी; वे बैठती होंगी या होवेंगी।

सामान्यभूतकाल ।

पुं० मैं, तू, वह—बैठा। हम, तुम, वे—बैठे।

स्त्री० मैं, तू, वह—बैठी। हम, तुम, वे—बैठीं।

आसन्नभूतकाल ।

पुं० मैं बैठा हूं; तू, वह—बैठा है। हम बैठे हैं, तुम बैठे

हो, वे बैठे हैं। स्त्री० मैं बैठी हूं; तू, वह—बैठी है। हम बैठी हैं, तुम बैठी हो, वे बैठी हैं।

पूर्णभूतकाल।

पुं० मैं, तू, वह—बैठा था। हम, तुम, वे—बैठे थे।

स्त्री० मैं, तू, वह—बैठी थी। हम, तुम, वे—बैठी थीं।

सन्दिग्धभूतकाल।

पुं० मैं बैठा हूंगा या होऊंगा; तू, वह—बैठा होगा या होवेगा। हम बैठे होंगे या होवेंगे। तुम बैठे होगे, होओगे या होवोगे, वे बैठे होंगे या होवेंगे।

स्त्री० मैं बैठी हूंगी या होऊंगी; तू वह—बैठी होगी या होवेगी। हम बैठी होंगी या होवेंगी; तुम बैठी होगी, होओगी या होवोगी; वे बैठी होंगी या होवेंगी।

हेतुहेतुमद्भूतकाल।

पुं० मैं, तू, वह—बैठता। हम, तुम, वे—बैठते।

स्त्री० मैं, तू, वह—बैठती। हम, तुम, वे—बैठतीं।

अपूर्णभूतकाल।

पुं० मैं, तू, वह—बैठता था। हम, तुम, वे—बैठते थे।

स्त्री० मैं, तू, वह—बैठती थी। हम, तुम, वे—बैठती थीं।

विधिक्रिया।

पुं० या स्त्री० मैं बैठूं, तू बैठ, वह बैठे। हम बैठें, तुम बैठो, वे बैठें।

आदर सू० विधि, पुं० या स्त्री०—आप बैठें वा बैठिये या बैठिए।

परोक्षसू० विधि, पुं० या स्त्री०—तुम वा आप बैठियो या बैठिओ।

सम्भावनाक्रिया।

पुं० या स्त्री मैं बैठूं; तू, वह-बैठे। हम बैठें, तुम बैठो, वे बैठें।

भविष्यकाल।

पुं० मैं बैठूंगा, तू, वह-बैठेगा। हम बैठेंगे, तुम बैठोगे, वे बैठेंगे।

स्त्री०—मैं बैठूंगी, तू, वह बैठेगी। हम बैठेंगी, तुम बैठोगी, वे बैठेंगी।

पूर्वकालिकक्रिया।

बैठ, बैठ के, या कर या करके।

—·······—

कर्तृप्रधान सकर्मकक्रिया 'देखना' के रूप

सामान्यवर्त्तमानकाल।

पुं०—मैं देखता हूं, तू, वह—देखता है। हम देखते हैं, तुम देखते हो, वे देखते हैं।

स्त्री - मैं देखती हूं, तू, वह-देखती है। हम देखती हैं, तुम देखती हो, वे देखती हैं।

सन्दिग्धवर्त्तमानकाल।

पुं० मैं देखता हूंगा या होऊंगा, तू, वह—देखता होगा या होवेगा। हम देखते होंगे या होवेंगे। तुम देखते होगे या होओगे या होवोगे, वे देखते होंगे या होवेंगे।

स्त्री—मैं देखती हूंगी या होऊंगी; तू वह—देखती होगी या होवेगी। हम देखती होंगी या होवेंगी, तुम देखती होगी या होओगी या होवोगी, वे देखती होंगी या होवेंगी।

☞ सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत में कर्तृप्रधान सकर्मक क्रिया के रूप नहीं होते किन्तु नीचे लिखे हुए रूप कर्मप्रधान ही के होते हैं। कोई २ हिन्दी वैयाकरण ऐसा कहते हैं। प्राय: यह बात नहीं—सा० भूत, आ० भूत, पूर्णभूत और संदिग्धभूत कालों में भी सकर्मक क्रिया का कर्त्ता प्रधान ही रहता है। जहां कर्ता के उत्तर 'ने' यह चिह्न लगता है और कर्म का चिह्न 'को' नहीं आता वहां क्रिया का रूप कर्म के अनुसार होता है; जैसे, 'मैं ने रोटी खाई'—और जहां 'को' यह चिह्न आता है वहां क्रिया का रूप कर्म के अनुसार नहीं होता; जैसे, 'मैं ने रोटी को खाया' इत्यादि वाक्यों में। भावप्रधान प्रयोग में कर्त्ता के उत्तर 'से' यह चिह्न लगता है; जैसे, मुझसे रोटी नहीं खाई जाती, 'मुझसे खाया नहीं जाता' इत्यादि वाक्यों में।

सामान्यभूतकाल।

पुं० या स्त्री०—मैं ने, तू ने, उसने-देखा (या देखी)। हम ने तुमने, उनने (या उन्होंने) देखा (या देखी)।

आसन्नभूतकाल।

पुं० या स्त्री०—मैं ने, तू ने, उसने-देखो (या देखी) है। हम ने, तुम ने, उनने (या उन्हों ने) देखा (या देखी) है।

पूर्णभूतकाल।

पुं० या स्त्री०—मैं ने, तू ने, उसने-देखा था (या देखी) थी। हमने, तुमने, उनने (या उन्होंने) देखा था (या देखी) थी।

सन्दिग्धभूतकाल।

पुं० या स्त्री०-मैं ने, तू ने, उसने-देखा होगा (या देखी होगी)। हमने, तुमने उनने (या उन्होंने)-देखा होगा (या देखी होगी)।

हेतुहेतुमद्भूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखता। हम, तुम, वे-देखते।

स्त्री०—मैं, तू, वह देखती। हम, तुम, वे-देखतीं।

अपूर्णभूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखता था। हम, तुम, वे-देखते थे।
स्त्री०—मैं, तू, वह-देखती थी। हम, तुम, वे-देखती थीं।

विधिक्रिया।

पुं० या स्त्री०—मैं देखूं, तू देख, वह देखे। हम देखें, तुम देखो, वे देखें।

आदरसू० विधि, पुं० या स्त्री० आप देखिये या देखिए
परोक्षसू० विधि, पुं० या स्त्री०-तुम या आप देखियो या देखियो।

सम्भावनाक्रिया।

पुं० या स्त्री०—मैं देखूं, तू, वह-देखे। हम देखें, तुम देखो, वे देखें।

भविष्यकाल।

पुं०—मैं देखूंगा; तू, वह-देखेगा। हम देखेंगे, तुम देखोगे, वे देखेंगे।
स्त्री०—मैं देखूंगी; तू, वह-देखेगी। हम देखेंगी, तुम देखोगी, वे देखेंगी।

पूर्वकालिकक्रिया।

देख, देख के या कर या करके।

कर्मप्रधान सकर्मकक्रिया 'देखा जाना' के रूप।

सामान्यवर्त्तमानकाल।

पुं०—मैं देखा जाता हूं; तू, वह-देखा जाता है। हम देखे जाते हैं, तुम देखे जाते हो, वे देखे जाते हैं।

स्त्री०—मैं देखी जाती हूं। तू, वह-देखी जाती है। हम देखी जाती हैं, तुम देखी जाती हो, वे देखी जाती हैं।

सन्दिग्धवर्त्तमानकाल।

पुं०—मैं देखा जाता हूंगा या होऊंगा ; तू वह—देखा जाता होगा या होवेगा। हम देखे जाते होंगे या होवेंगे, तुम देखे जाते होगे वा होओगे या होवोगे, वे देखे जाते होंगे या होवेंगे।

स्त्री०—मैं देखी जाती हूंगी या होऊंगी ; तू, वह देखी जाती होगी या होवेगी। हम देखी जाती होंगी या होवेंगी, तुम देखी जाती होगी वा होओगी या होवोगी, वे देखी जाती होंगी या होवेंगी।

सामान्यभूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखा गया। हम, तुम, वे-देखे गये या गए।

स्त्री०—मैं, तू, वह-देखी गयी या गई। हम, तुम, वे-देखी गयीं या गईं।

आसन्नभूतकाल।

पुं०—मैं देखा गया हूं ; तू, वह-देखा गया है। हम देखे गये या गए हैं, तुम देखे गये या गए हो, वे देखे गये या गए हैं।

स्त्री०—मैं देखी गयी या गई हूं ; तू, वह देखी गयी या गई है। हम देखी गयी या गई हैं, तुम देखी गयी या गई हो, वे देखी गयी या गई हैं।

पूर्णभूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखा गया था। हम, तुम, वे—देखे गये या गए थे।

स्त्री०—मैं, तू, वह-देखी गयी या गई थी। हम, तुम, वे-देखी गयी या गई थीं।

सन्दिग्धभूतकाल।

पुं०—मैं देखा गया हूंगा या होऊंगा ; तू, वह-देखा गया होगा या होवेगा। हम देखे गये होंगे या होवेंगे, तुम देखे गये या गए होगे वा होओगे या होवोगे, वे देखे गये या गए होंगे या होवेंगे।

स्त्री०—मैं देखी गयी या गई हूंगी या होऊंगी ; तू, वह-देखी गयी या गई होगी या होवेगी। हम देखी गयी या गई होंगी या होवेंगी, तुम देखी गयी या गई होगी वा होओगी या होवोगी। वे देखी गयी या गई होंगी या होवेंगी।

हेतुहेतुमद्भूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखा जाता। हम, तुम, वे-देखे जाते।

स्त्री०—मैं, तू, वह-देखी जाती। हम, तुम, वे-देखी जातीं।

अपूर्णभूतकाल।

पुं०—मैं, तू, वह-देखा जाता था। हम, तुम, वे-देखे जाते थे।

स्त्री०—मैं, तू, वह-देखी जाती थी। हम, तुम, वे-देखी जाती थीं।

विधिक्रिया।

पुं०—मैं देखा जाऊं ; तू देखा जा; वह देखा जाय, जाये, जाए, जावे या जावै। हम देखे जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं; तुम देखे जाओ या जावो, वे देखे जायं, जायें, जाएं, जावें, या जावैं।

स्त्री०—मैं देखी जाऊं ; तू देखी जा; वह देखी जाय, जाये, जाए, जावे या जावै। हम देखी जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं; तुम देखी जाओ या जावो ; वे देखी जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं।

आदरसू० विधि, पुं० देखे जाइये या जाइए-स्त्री० देखी जाइये या जाइए। परोक्षसू० विधि, पुं० देखे जाइयो या जाइओ-स्त्री० देखो जाइयो या जाइओ।

सम्भावनाक्रिया।

पुं०—मैं देखा जाऊं, तू, वह-देखा जाय, जाये, जाए, जावे या जावै। हम देखे जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं; तुम देखे जाओ या जावो; वे देखे जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं।

स्त्री०—मैं देखो जाऊं; तू, वह-देखी जाय, जाये, जाए, जावे या जावै। हम देखो जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं; तुम देखो जाओ या जावो; वे देखो जायं, जायें, जाएं, जावें या जावैं।

भविष्यकाल।

पुं०—मैं देखा जाऊंगा; तू, वह-देखा जायगा, जायेगा, जाएगा, जावेगा या जावैगा। हम देखे जायंगे, जायेंगे, जाएंगे, जावेंगे या जावैंगे; तुम देखे जाओगे या जावोगे; वे देखे जायंगे, जायेंगे, जाएंगे, जावेंगे या जावैंगे।

स्त्री०—मैं देखो जाऊंगो; तू, वह देखी जायगी, जायेगी, जाएगी, जावेगी या जावैगी। हम देखी जायंगी, जायेंगी, जाएंगी, जावेंगी या जावैंगी; तुम देखो जाओगी या जावोगी; वे देखो जायंगी, जायेंगी, जाएंगी, जावेंगी या जावैंगी।

पूर्वकालिकक्रिया।

देखा जा, देखा जा के या जा कर या करके

पाठ २० । प्रेरणार्थक क्रिया

(१) पढ़वाना—'पढ़वाना' यह प्रेरणार्थक क्रिया है क्योंकि इससे प्रकाशित होता है कि कोई दूसरो व्यक्ति क्रिया के करने के लिये प्रेरणा करता है।

(अ) प्रेरणार्थक क्रिया उसे कहते हैं जिसमें क्रिया के कर्त्ता को कोई दूसरा कर्त्ता उस क्रिया के करने के लिये प्रेरणा करे; जैसे, 'गुरु शिष्य से पोथी पढ़वाता है' इस वाक्य में।

नीचे लिखे चक्र को कंठस्थ करो—

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
मरना	मारना	मरवाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
गाना	गवाना	गवावना
गिरना	गिराना	गिरवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना
खुलना	खोलना	खोलवाना, खुलवाना
छुटना	छोड़ना	छोड़वाना, छुड़वाना
डूबना	डुबाना	डुबवाना
सोना	सोलाना, सुलाना	सोलवाना, सुलवाना
बोलना	बोलाना, बुलाना	बोलवाना, बुलवाना
दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना

—...—

सकर्मक	द्विकर्मक	प्रेरणार्थक
करना	कराना	करवाना, करवावना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना, पढ़वावना
खाना	खिलाना	खिलवाना, खिलवावना

सीना	सिलाना	सिलवाना, सिलवावना
पूछना	पुछाना	पुछवाना, पुछवावना
देना	दिलाना	दिलवाना, दिलवावना
धोना	धोलाना, धुलाना	धोलवाना, धुलवाना; धोलवावना, धुलवावना

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया का स्वरूप बतलावो—वह मुझको पढाता है। सोहन मुझसे वह बात पुछवाता है जिसे मैं नहीं कह सकता। सोहन से चार रुपये दिलवा दो। उसे अन्न खिलाओ। उसको दरजा चढ़वावो। सबक छुट गया। घड़ा पानी में डुबाओ। मकान मत गिरवावो। वह कागज फाड़ता है। सोहन फाटक खोलवाता है।

पाठ २१। संयुक्त क्रिया

(१) 'देख सकना', 'देख भाल चुकना'। 'देख सकना' यह संयुक्त क्रिया है क्योंकि यह 'देखना' और 'सकना' इन दोनों क्रियाओं के संयोग से बनी है—'देख भाल चुकना' यह भी संयुक्त क्रिया है क्योंकि यह 'देखना', 'भालना' और 'चुकना' इन तीन क्रियाओं के संयोग से बनी है।

(अ) संयुक्त क्रिया उसको कहते हैं जो दो या दो से अधिक क्रियाओं के संयोग से बने; जैसे, कह सुनाना, बोल चाल करना—संयोग होने का यह प्रकार है कि अन्त की क्रिया का चिह्न 'ना' बना रहता है और आदि की क्रिया या क्रियाओं के चिह्न 'ना' का लोप हो जाता है।

नीचे लिखे चक्र को कंठस्थ करो—

पढ़ सकना	बच रहना	कहा करना	आया जाया करना
लिख सकना	कह सुनाना	मार चुकना	लिख पढ़ सकना

ले सकना। आ मिलना पढ़ चुकना लेन देन करना
दे सकना। चढ़ आना हंसने लगना उठा बैठी करना

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में संयुक्त क्रियाओं को बतलाओ—
लड़का नहीं पढ़ सकता। वह कुछ न दे सका। उसका काम नहीं चलने पाता। अब तक वह खा चुकेगा। अब तक तो आप खो बैठ चुकते। उसका बेटा जाया चाहता है। खिलौना बोला चाहता है। आप दौड़ धूप करना पसन्द करते हैं। बहुत खेल कूद करना अच्छा नहीं। रो गा कर फुसलाना चाहते हो।

पाठ २२। अव्यय

(१) जब, मैं, वाह, और इत्यादि। इन शब्दों को अव्यय कहते हैं क्योंकि इनके आकार में कुछ भी विकार नहीं होता।

(अ) जिस शब्द में लिङ्ग, वचन और कारक से कुछ भी विकार नहीं होता अर्थात् जिसका आकार सदा एकसा दिखाई देता है उसको अव्यय कहते हैं; जैसे, अब, कब, यथा, यदा इ०।

अव्यय के पांच प्रकार कह चुके हैं-क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, संयोजक, विभाजक और विस्मयादिबोधक।

१ क्रियाविशेषण

१) कालवाचक; जैसे, अब, तब, जब, कब, आज, कल, परसों, तरसों, सबेरे, सन्ध्या, भोरे, सांझ, तुरन्त, सदा, बारंबार, निदान इत्यादि।

(२) स्थानवाचक; जैसे, यहां, वहां, कहां, जहां, ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर, आगे, पीछे, दूर, निकट, आसपास, चारो ओर इत्यादि।

(३) प्रकार वाचक; जैसे, ऐसा, वैसा, जैसा, कैसा,

सचमुच, संतमेंत, वृथा, झटपट, ठीक, केवल, यद्यपि, तथापि, परस्पर इत्यादि ।

(४) परिमाणवाचक; जैसे, इतना, उतना, कितना, जितना, बहुत, कुछ, थोड़ा, अत्यन्त, बिरलें, आदि, अतिशय, तक इ० ।

(५) स्वीकार निषेधवाचक; जैसे, हां, नहीं, अवश्य, निस्सन्देह, मत इत्यादि ।

(६) निश्चयवाचक; जैसे, अभी, कभी, जभी, तभी, योंही, ज्योंही, त्योंही इत्यादि ।

२ सम्बन्धबोधक ।

(१) एक वे जिनके पूर्व संज्ञा को विभक्ति नहीं आती; जैसे, रहित, सहित, समेत, सुद्धां इत्यादि ।

(२) दूसरे वे जिनके पूर्व संज्ञा के सम्बन्धकारक की विभक्तियां आती हैं; जैसे, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर, पास, समीप, सामने, बिना, साथ, संग, निमित्त, द्वारा, बदले, ढिक इत्यादि ।

३ संयोजक

जैसे—औ, और, यथा, तथा, जो सो, जौभी तौभी, यद्यपि तथापि, अथ, कि, फिर, यदि, एवं, पुनः इत्यादि ।

४ विभाजक

जैसे—वा, अथवा, क्या-क्या; परन्तु, किन्तु, चाहे, बरन, बल्कि, क्योंकि, न-न, या-या, पर इत्यादि ।

५ विस्मयादिबोधक

(१) क्लेश वा पश्चात्ताप बोधक—आह, ऊह, हाय २, हाय रे, त्राहि २, बाप रे, वाह, याह रे, मय्यारे, बाप रे बाप इ० ।

(२) आनन्दबोधक—धन्य २, जय २, वाह २ इत्यादि ।

(३) निरादर वा घृणाबोधक—छी २, थू २, थुड़ी २, दूर २, धिक्, फिश, धत्, हत् इत्यादि।

(४) आश्चर्यबोधक—अहा, ओहो, वाह वा इत्यादि।

भाग ३

पाठ १। वाक्यविचार

१ वाक्यविचार व्याकरण का वह भाग है जिसमें पदों से वाक्यों की रचना की प्रक्रिया का वर्णन है।

२ वाक्य उस पद समूह को कहते हैं जो (श्रोता के प्रति) वक्ता के वक्तव्य भाव के बोधन में समर्थ हो; जैसे, 'बालक हँसता है' यह वाक्य है।

३ बिना क्रिया के वाक्य नहीं बन सकता क्योंकि क्रिया वाक्य के अन्त में रह कर उसके अर्थ को पूरा करती है। वाक्य में प्रत्येक कारक की आवश्यकता नहीं है परन्तु कर्त्ता और क्रिया के बिना वाक्य नहीं बनता। वाक्य में कर्त्ता और क्रिया की स्थिति को उद्देश्यविधेयभाव कहते हैं। कर्त्ता सदा उद्देश्य और क्रिया सदा विधेय रहती है। जब क्रिया सकर्मक होती है तो उसको कर्म भी आता है।

(अ) जिसका अवलम्बन करके कुछ नवीन कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। श्रोता का अज्ञात विषय 'नवीन' कहाता है।

(इ) जो कुछ नवीन कहा जाता है उसको विधेय कहते हैं। 'घोड़ा दौड़ता है' इस वाक्य में घोड़े का अवलम्बन करके दौड़ना बतलाया जाता है; इस कारण 'घोड़ा' यह उद्देश्य और 'दौड़ता है' यह विधेय है। इस वाक्य में कर्त्ता और क्रिया दो ही हैं।

४ उद्देश्य और विधेय दोनों को विशेषण द्वारा बढ़ा सकते हैं; जैसे, काला घोड़ा अच्छा दौड़ता है-यहां विशेषण 'काला' सहित संज्ञा पद 'घोड़ा' उद्देश्य है और विशेषण 'अच्छा' सहित क्रिया पद 'दौड़ता है' विधेय है।

५ जहां दो संज्ञायें परस्पर निरपेक्ष आतो हैं वहां भी उद्देश्यविधेयभाव माना जाता है; जैसे, 'यह पुरुष सिंह हो गया'; 'वह स्त्री पुरुष बनी है'; 'वह लड़का साधु है' इत्यादि। पहिले वाक्य में 'यह पुरुष' उद्देश्य है और 'सिंह हो गया' विधेय; दूसरे वाक्य में 'वह स्त्री' उद्देश्य है और 'पुरुष बनी है' विधेय; और तीसरे वाक्य में 'वह लड़का' उद्देश्य है और 'साधु है' विधेय।

६ जहां संज्ञापद कर्त्ता हो और उसका विशेषण क्रिया के पूर्व रहे तो उस संज्ञा को उद्देश्य और विशेषण सहित क्रिया को विधेय कहते हैं; जैसे, कूए का पानी खारा होता है-यहां कूए का पानी' उद्देश्य और 'खारा होता है' विधेय है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्य में उद्देश्य और विधेय बतलाओ— सितारे चमकते हैं। लड़के खेलते हैं। नौकर पानी भर रहा है। सोनार कल आया था। परिश्रमी लड़के बहुत बीमार हैं। वह साधु चोर निकला। वह मनुष्य पशु है। लड़का राजा हो गया। कल का पाठ कण्ठ है। वह लंगड़ा मनुष्य अन्धा हो गया। माली ने पेड़ लगाया है योद्धा अपनी तलवार लिये है। वह नंगा लड़का नदी में पौंड़ रहा है। खेलवाड़ी लड़कों की अपकीर्त्ति होती है अच्छे लड़के और लड़कियां अपने मा बाप को प्रसन्न रखते हैं।

पाठ २। वाक्यरचना का क्रम

१ जो पद पूर्व लिखित नियमों से सिद्ध हो चुके हैं उन्हें

एक स्थान में क्यों कर लिखना चाहिये उसे वाक्यरचना कहते हैं; जैसे, घोड़े दौड़ते हैं। कौनसा शब्द कौनसे शब्द से मिल खाता है और किससे नहीं इसका विचार करके वाक्य बनाने को पदयोजना कहते हैं; जैसे, 'आग से सींचता है' इसमें पदयोजना ठीक नहीं हुई।

(अ) वाक्यरचना की साधारण रीति यह है कि पहिले कर्त्ता तब यथायोग्य स्थान में करणादि कारक तत्पश्चात् कर्म और तदनन्तर क्रिया रक्खी जावे ; जैसे, 'चोर ने तलवार से गहनों के लिये नगर से दूर गङ्गातट पर उस लड़के का शिर काटा' इत्यादि।

२ जो पद जिस कारक से सम्बन्ध रखता हो उसको उस कारक के निकट रक्खो और जो पद क्रिया से सम्बन्ध रखता हो उसको क्रिया के निकट रक्खो ; जैसे, 'उस जवान चोर ने चोखो तलवार से चांदी सोने के गहनों के लिये अपने नगर से बहुत दूर पवित्र गङ्गातट पर उस छोटे सुन्दर लड़के का मुंडा हुआ शिर बड़ी उतावली से काटा' इत्यादि।

३ विशेषण प्रायः अपने विशेष्य के पूर्व और क्रियाविशेषण प्रायः क्रिया के पूर्व आता है ; जैसे, 'नीला कमल अभी लाओ' इत्यादि। परन्तु जब विशेषण विधेय होता है तो वह अपने विशेष्य के अनन्तर प्रयुक्त होता है ; जैसे, 'वह कमल नीला है' इत्यादि।

४ पूर्वकालिक क्रिया उसी क्रिया के निकट रहती है जिससे वाक्य की समाप्ति होती है; जैसे, 'ब्राह्मण पलथी मार कर भोजन करता है' न कि 'पलथी मार कर ब्राह्मण भोजन करता है' इत्यादि।

५ प्रश्नवाचक बहुत करके उसी के पूर्व आता है जिसके

विषय में प्रश्न रहता है ; जैसे, यह कौन लड़का है ? यह क्या वस्तु है ? ये क्या करते हैं ? क्या चाहते हो ? पढ़ना चाहते हो क्या ? जब प्रश्नवाचक शब्द नहीं रहता तो वाक्य में बोलनेवाले की चेष्टा वा उसके उच्चारण के स्वर भेद से प्रश्न समझा जाता है; जैसे, जाऊं, मुझे चिढ़ाते हो । तुम ने पाया न । यहां 'न' नहीं के अर्थ में नहीं आया है परन्तु वितर्कवाचक है । अकेले 'एं०' भी प्रश्नवाचक है ।

६ छन्द की आवश्यकता और बोध की विशेषता के लिये शब्द अपने स्थान को छोड़ भी देते हैं ; जैसे, 'अब आये दिन बुरे'; 'आया आगम खोटा'; 'करि निज जनम सुफल करि लेखी' इत्यादि ।

उदाहरण । नीचे लिखे वाक्यों को ऊपर लिखे नियमों के अनुसार शोध कर कहो—कपड़ा सूई से स्त्री सीती है । दानों को कपोत बीन २ कर चोंच से खाता है । अति सुन्दर है देखने में मेरा घोड़ा । प्रतिदिन तोड़ता है फूल माली बुड्ढा पेड़ों से । मनुष्य ग्रामीण परिश्रमी होते हैं बैल नागौरी के समान । रेशमी बिछौना है कंकरेली धरती दरिद्र मनुष्य को । लकड़ी बड़ी मिलती है कम । संभालती है वह बोझ भलीभांति मोटी रस्सी । आंख मूंद कर लड़का है सोता । वह स्त्री पकाती है रोटी बैठ के चूल्हे के सामने । वह पुस्तक है कौन दोगे उसे किसे । करती है वह क्या । तुमने देखा था जिसे यह वही है लड़का क्या । करना था उसे जो सो किया उसने अब करना है तुम को क्या । बालक कंठ करता है रात को पाठ । नहीं लगा अच्छा उसके मित्र को । बहुत मोटी थी गाय उस अहीर की । चलके थोड़ी दूर वह बैठ गया रास्ते में । मत कूंए से भरो पानी प्रतिदिन । कमल नीले उस ताल में फूले हैं । पुल के पास लंगड़ा कर वह चलने लगा ।

—···—

पाठ ३ । कर्त्ता और क्रिया (अकर्मक)

१ जब अकर्मक क्रिया कर्तृप्रधान रूप में प्रयुक्त होती है तब उसके लिङ्ग वचन उसके कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं; जैसे, 'नदी बहती है' इत्यादि वाक्य में।

२ जब अकर्मक क्रिया भावप्रधान रूप में प्रयुक्त होती है तब कर्त्ता का करण कारक में प्रयोग होता है और क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान हो जाता है ; जैसे, लड़की से नहीं हँसा जाता; उस बूढ़े मनुष्य से अब नहीं उठा जाता इ०।

३ जब अकर्मक क्रिया के अनेक कर्त्ता हों और लिङ्ग में समान न हों तो क्रिया प्रायः बहुवचन की आती है और क्रिया का लिङ्ग अन्तिम कर्त्ता के लिङ्ग के अनुसार होता है ; जैसे, घोड़े, बैल और बकरियाँ चरती हैं ; बकरी, घोड़ा और बैल चरते हैं। प्रायः क्रिया बहुवचनान्त होती है और बहुवचनान्त कर्त्ता को सब कर्त्ताओं के अन्त में रखना चाहिये।

(अ) जब लिङ्ग में कर्त्ता भिन्न २ हों और कोई समुदायवाचक शब्द उनसे परे आवे तो क्रिया समुदायवाचक के अनुसार होगी; जैसे, नर नारी, राजा रानी, सब के सब बाहर निकले।

(इ) जब समुच्चायक से बहुवचन की विवक्षा नहीं रहती तो क्रिया एकवचन ही की होती है; जैसे, 'उसका रुपया पैसा कपड़ा लत्ता बरतन भाँड़ा सब का सब उठ गया' इत्यादि।

(उ) जब समुच्चायक न रहे और बहुवचन की विवक्षा हो तो क्रिया बहुवचन की होती है; जैसे, इसके मोल लेने में मैं ने पाँच रुपये चार आने आठ पाई दिये 'हैं'।

(ऋ) कभी २ अकर्मक क्रिया के प्रयोग में कालादिवाचक संज्ञा का कर्मरूप में व्यवहार किया जाता है; जैसे, 'देवदत्त

दिन को सोता है, इस वाक्य में; परन्तु 'यज्ञदत्त दिन में सोता है' इस वाक्य में 'दिन' अधिकरण कारक है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों को ऊपर लिखे नियमों के अनुसार शुद्ध करो—गर्मी पडता है। पवन चलती है। ऋतु अनुकूल देख पडता है। रात बड़ा होता है। बात नहीं सहा जाता। आदमी बोली बोलती है। पिता और पुत्र आता। गोपाल और जैपाल गया। मोहन, सोहन और राधिका आये। आम, नीबू, इमली सब के सब खट्टी हैं। बादाम पिस्ता किसमिस सब बाज़ार में बिकते हैं। इस जोड़ धोती के दाम मैं ने तीन रुपये चार आने छ पाई दिया है। पृथ्वी, चन्द्रमा और सब ग्रह सूर्य के आस पास घूमा करती हैं। घोड़े और घोड़ियां दौड़ते थे। राजा रानी आये।

पाठ ४। कर्त्ता और क्रिया (सकर्मक)

१ जब कर्तृप्रधान सकर्मक क्रिया वर्त्तमान और भविष्य कालों को हो तो उसका लिङ्ग वचन कर्त्ता के लिङ्ग वचन के समान होता है। जब वह भूतकाल को हो तो अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत कालों को छोड़ के। जिनमें भी लिङ्ग वचन कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार आते हैं) शेष भूतकालों में 'ने' चिह्न आता है तो क्रिया कर्म के अनुसार होती है और कर्म के चिह्न 'को' का प्रयोग भी नहीं होता। परन्तु इन भूतकालों के प्रयोग में इनके कर्त्ता का 'ने' चिह्न और कर्म का 'को' चिह्न यदि दोनों आवें तो क्रिया सदा पुंलिङ्ग एकवचन को होती है; जैसे, लड़का पोथी पढ़ता, पढ़ता है, पढ़ता था, पढ़ता होगा; लड़के ने पोथी पढ़ी, पढ़ी है, पढ़ी थी, पढ़ी होगी-अथवा लड़के ने वा लड़कों ने पोथी को पढ़ा, पढ़ा है, पढ़ा था, पढ़ा होगा इत्यादि।

२ जब सकर्मक धातु की क्रियायें 'बोलना, भूलना, बकना, लाना और जनना' प्रयुक्त होती हैं तो पूर्वोक्त भूतकालों में कर्त्ता के आगे 'ने' चिह्न नहीं आता; जैसे, वह बोला, मैं भूला हूँ, तुम बके थे, तुम लाये होगे, कबूतरी अण्डा जनी इ०।

३ जब सकर्मक क्रियायें 'जाना, सकना, चुकना' इत्यादि क्रियाओं से संयोग पाती हैं तोभी पूर्वोक्त भूतकालों में 'ने' चिह्न नहीं आता; जैसे, मैं खा गया, तू पढ़ सका है, वह लिख चुका था, तुम खा चुके होगे-इत्यादि।

(अ) 'समझना' क्रिया के आगे 'ने' चिह्न विकल्प करके आता है; जैसे, लड़का समझा, लड़के ने समझा इत्यादि।

(इ) जब 'डालना' व 'देना' क्रियाओं का संयोग किसी अकर्मक वा सकर्मक क्रिया से हो तो पूर्वोक्त भूतकालों में 'ने' चिह्न आता है; जैसे, उसने रात भर में सारा ग्रन्थ देख डाला, उसने रात भर जाग डाला, उसने तीन दिन जाग दिया, उसने हीरा खो दिया इत्यादि। 'करना' क्रिया का संयोग होने से 'ने' चिह्न नहीं आता; जैसे, 'वह रात भर पढ़ा किया' इ०।

(उ) जब सकर्मक के साथ अकर्मक और अकर्मक के साथ सकर्मक क्रिया संयुक्त हो तो पूर्वोक्त भूतकालों में कर्त्ता के उपर 'ने' यह चिह्न नहीं लगता; जैसे, मैं पढ़ सका, लड़का खा चुका-नौकर ले गया—वह पीछे हो लिया।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों को ऊपर लिखे नियमों के अनुसार शुद्ध करो—सोहन ने बिल्ली को मारी। सोहन कुत्ते को पकड़ा। गोपाल गाय दुहा। अहीर भैंस खरीदा। मेरा लड़का अपनी पोथी को बेंच डाली। नौकर की स्त्री अपना वेतन नहीं पाई। मैं ने झूठ नहीं बोला। रानी ने अपना सोहाग लेना भूल गई। लड़के ने मा के सामने बहुत बंका। तुमने

वहां से चले गये तो उसने बोल सका। आप ने भोजन कर लिया तब उसने दाम दे चुका। उस स्त्री ने बात समझा पर मनुष्य देर में समझा। आप सारी कहानी कह डाली पर वह बालक बोलने न दिया। उसने रात भर जागा किया। मेरा पुत्र तीनों पुस्तकें कोल्हापुर भेज दिया। मैं ने पीछे हो लिया। लड़के ने पढ़ सका। नौकर ने मेरे पास से ले गया।

पाठ ५। कर्त्ता और क्रिया (कर्मप्रधान)

जब वाक्य में कर्मप्रधान क्रिया का प्रयोग होता है तो कर्त्ता को करणकारक और कर्म को कर्त्तृकारक होता है और क्रिया कर्मानुसारिणी होती है; जैसे, 'पोथी लड़के से पढ़ी जाती है'; 'खेत किसान से जोता जाता है' इत्यादि।

२ जब द्विकर्मक क्रिया का कर्मप्रधान में प्रयोग किया जाता है तो कर्त्ता को करणकारक और प्रधान कर्म को कर्त्तृकारक होता है किन्तु गौण कर्म ज्यों का त्यों बना रहता है; जैसे, 'पाठ गुरू से शिष्य को पढ़ाया जाता है'; 'कैंची लोहार से दर्जी को दी जाती है' इत्यादि।

(क) 'प्रधान कर्म' वही है जो कर्मकारक में रहता है। 'गौण कर्म' से वह व्यक्ति सूचित होता है जिसको कोई वस्तु दी जाती है अथवा जिसके लिये कोई काम किया जाता है; जैसे, 'गोपाल ने कृष्ण को एक आम दिया'; 'राजा ने सोहन के लिये बात बनाई-पहिले वाक्य में 'आम' और दूसरे में 'बात' प्रधान कर्म हैं। 'एक आम गोपाल से कृष्ण को दिया गया; बात राजा से सोहन के लिये बनाई गई'-यह कर्मप्रधान क्रियाओं का प्रयोग है।

(ख) कुछ क्रियाओं के (जैसे 'बनाना, कहना, नियत

करना, सोचना इत्यादि') अकेले प्रयुक्त होने पर समग्र व्यापार का बोध नहीं होता। समग्र व्यापार बोधगम्य होने के लिये दूसरे शब्द को आवश्यकता होती है; जैसे, 'उसने मोहन को मन्त्री बनाया', 'गोपाल ने जेपाल से समाचार कहा' इत्यादि वाक्यों में 'मन्त्री' और 'समाचार' शब्द। इन वाक्यों का कर्मप्रधान में ऐसा रूप होगा; जैसे, 'मोहन उससे मन्त्री बनाया गया'; 'जैपाल गोपाल से समाचार कहा गया' इत्यादि। ये व्यापारपूरक शब्द हैं और गौण कर्म के स्थान पर आते हैं - कर्मप्रधान वाक्य में यही कर्तृकारक में आते हैं और कर्त्ता का करणकारक में प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में यदि क्रिया कर्तृप्रधान की हो तो उसे कर्मप्रधान और कर्मप्रधान की हो तो उसे कर्तृप्रधान की बनाओ-मैं ने उसको पुकारा। राम ने रावण को मारा। गोपाल ने उल्लू देखा था। उसने घंटा बजाया होगा। उस स्त्री ने हमको पांच आम दिये। हरि ने गोपाल को अपने पाठ देखलाये। मेघ से सूर्य ढँक गया। अँगरेज़ों ने अफ़ग़ानों को कई वार हराया। जूए से बहुतेरों का नाश किया गया है। ऐसी अशुद्धियां छोटे २ बच्चों से की जाती हैं। पत्थर की पट्टी मोहन से टूट गई। उस देहाती का बैल बाघ से मारा गया। तुम्हारा गेहूं नौकर से पिसा गया होता। उस ग़रीब का घर चमारों से फूंक दिया गया। वैद्य रोगी को अधिक भोजन नहीं देता। खेल से लड़के खराब हो गये। यह प्रश्न गोपाल से लड़के पूछे गये। कच्चे फल मूर्खों से खाये गये।

पाठ ६। कर्त्ता और क्रिया

१ आदर के लिये क्रिया बहुवचनान्त होती है चाहे आदर सूचक शब्द कर्त्ता के साथ रहे चाहे न रहे; जैसे, 'पण्डित जी आये', 'आप क्या लिखते हैं', 'सभापति नहीं आये' इत्यादि।

२ अनेक एकवचन के कर्त्ताओं के मध्य में जब विभाजक अव्यय आता है तो क्रिया एकवचन की आती है और संयोजक अव्यय आता है तो बहुवचन की; जैसे, 'मेरा घोड़ा या खेत आज बेचा जायगा', 'मुझे न भूख न प्यास लगती है', 'गोपाल और जंपाल आयें' इत्यादि।

३ जब एक वाक्य में तीनों पुरुष के कर्त्ता आते हैं तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होती है; जैसे, वे, हम और तुम चलेंगे।

(अ) जब अन्यपुरुष वा मध्यमपुरुष के साथ उत्तमपुरुष आता है तौभी क्रिया उत्तमपुरुष की आती है; जैसे, वह और मैं चलूंगा; तूँ और मैं चलूँगा।

(इ) जब अन्यपुरुष व मध्यमपुरुष दो हो कर्त्ता हो के आते हैं तो क्रिया मध्यमपुरुष की आती है; जैसे, वह और तू जा।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो — महन्त आया। वे लिखता है। गुरू या चेला जावें। गुरू और चेला जाय। न घोड़ा न हाथी पहुंचे। मैं, तू और वह आवेगा। वे, हम और तुम सुनोगे। हम और तुम चलोगे। तूं और मैं पढ़ेगा। गुरू बोला।

पाठ ७। विशेष्य और विशेषण

१ जिससे जाति, गुण, क्रिया, व्यक्ति वा वस्तु समझी जाती है अथवा जो प्रधान हो और जिसका गुण दूसरे से बतलाया जाय उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे, पुरुष।

२ जो अप्रधान हो और प्रधान का गुण बतलावे वह विशेषण कहलाता है; जैसे, भाग्यवान पुरुष-यहां पुरुष प्रधान अर्थात् मुख्य संज्ञा है इसलिये उसे विशेष्य कहते हैं; और उसके गुण का बतलानेवाला 'भाग्यवान' शब्द अप्रधान अथवा सामान्यवाचक है इसलिये वह विशेषण कहाता है।

३ कहीं २ विशेषण जातिवाचक और व्यक्तिवाचक हो कर आता है; जैसे, पण्डित जो ५० आवेंगे-यहां 'पण्डित' व्यक्तिवाचक है क्योंकि एकही पण्डित जो अभिप्रेत है वही नहीं आया; चतौति करना पण्डित का धर्म नहीं-यहां 'पण्डित' यद्यपि गुणवाचक है तथापि गुणवाचकता न रखने से जातिवाचक है क्योंकि यहां पण्डित कहने से पण्डित मात्र समझे जाते हैं और एक विशेष पण्डित नहीं।

४ आकारान्त विशेषण के आकार को एकवचन निर्विभक्तिक कर्त्ता और कर्म को छोड़ के सर्वत्र सब कारकों के दोनों वचनों में 'एकार' आदेश होता है; जैसे, अच्छा बालक, अच्छे बालक ने, अच्छे साधु को, अच्छे लड़कों का, अच्छे मालियों पर इत्यादि।

(अ) यदि विभक्तियों के चिह्न न रहें और उनका संस्कार बना रहे तौभी आकार को एकार आदेश होता है; जैसे, 'बड़े घर कन्या ब्याही गई' इत्यादि।

५ यदि आकारान्त विशेषण स्त्रीलिङ्ग विशेष्य पद का विशेषण हो तो सब कारकों के दोनों वचनों में आकार को ईकार आदेश होता है; जैसे, 'मोटी बिल्ली', 'मोटी रस्सियों से' इ०।

(अ) विभक्तिचिह्न सहित सम्बन्धकारक पद भी विशेषण है; जैसे, आम का फल; आम के पत्ते; आम की गुठलियां इत्यादि।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—उस छोटा जानवर का बाल काला है। काला रंग के कपड़े जल्द फट जाते हैं। फटहा कपड़ो से दिन काटो। पीला मसी का पात्र कहां है। बड़ा लड़का के लिये जूता बनवा दो। इस छोटा घर के लिये क्या भाड़ा मांगता है। मोटा रस्सा को छांट कर रक्खो। टेढ़ा रेखा खैंचा गया। छोटा कन्या उदास

रहा करती है। बूढे माता का मान करना चाहिये। टूटा फटा बर्तनों से निर्वाह करो। झूठे बालिकाओं का विश्वास न करो। -

---

पाठ ८। विशेष्यविशेषण

१ जब विशेषण अपने विशेष्य के साथ आता है तो उसमें कारक और बहुवचन के चिह्न नहीं आते वह केवल अपने विशेष्य के पहिले आता है; जैसे, मोटियां रस्सियां.' 'कालियों को घोडियों को' इत्यादि नहीं होते वरन 'मोटी रस्सियां', 'काली घोडियों को' इत्यादि होते हैं।

२ जब विशेष्य नहीं रहता केवल विशेषण देख पडता है तो कारक के चिह्न और आदेश सब बने रहते हैं; जैसे, भूखों को अन्न और प्यासों को पानी दो।

३ जब कर्मकारक का चिह्न 'को' नहीं रहता तो विशेषण विशेष्य के अनुसार होता है और जब चिह्न 'को' रहता है तो विशेषण विशेष्य के अनुसार होता है परन्तु क्रिया सदा प्रथम-पुरुष एकवचन पुंलिङ्ग की आती है; जैसे 'उसने रेखा टढ़ी खैंची,' 'उसने रेखाओं को टेढ़ो खैंचा' इत्यादि।

४ कहीं २ विशेषण अपने विशेष्य से पहिले न आ कर उसके पीछे आता है; जैसे, 'वह पुरुष नंगा था आनी है' इत्यादि।

(स) कहीं २ उद्देश्य का विधेयरूपी विशेषण अन्य २ संज्ञा भी होती है; जैसे, उसने कज्जली को स्याही बनाया या बनाई' इ० वाक्य में 'कज्जली' उद्देश्य और 'स्याही' विधेय है।

५ जब विशेषण आकारान्त नहीं होता तो दोनों वचनों में उसको कोई विकार नहीं होता; जैसे, 'सुन्दर घोडियां' इ०।

६ जब एक विशेष्य के अनेक आकारान्त विशेषण हों तब सभों का वही लिङ्ग वचन होगा जो संज्ञा का है; जैसे, 'उसने बड़ी मोटी लम्बी लकड़ी देखी' इत्यादि।

७ जब एक विशेषण अनेक विशेष्यों का गुण बतलाता हो तो विशेषण का लिङ्ग अन्तिम विशेष्य के अनुसार होगा; जैसे, 'अनाज, फल और तरकारी महँगी है', 'बहुत सी बग्गियां घोड़े हाथी ऊँट थे'।

८ जैसे सम्बन्धकारक जिस संज्ञा से सम्बन्ध रखता है उसके अव्यवहित पूर्व आता है वैसे गुणवाचक शब्द जिस शब्द का गुण बतलाता है उसी के पूर्व आता है; जैसे, 'गाय का बड़ा बछवा', 'बड़ी गाय का बछवा' इत्यादि।

(क) कभी २ सम्बन्धकारक के चिह्नों का लोप होता है; जैसे, 'गङ्गातीर' इत्यादि। विशेष करके परिमाणवाचक संज्ञाओं से परे लोप होता है; जैसे, 'नव तोले सोना', 'आठ भर घी' इत्यादि।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—कालियों गायों को मोल ले लो। धनियों को मनुष्यों को बोलाओ। बालक ने पोथी के पत्रों को फाड़ डाले। लड़की ने अपनी गुड़ियां संवारा है। उसने दुपट्टे को धोती बना है। छोटी मोटी सोटा बांधे था। घोड़े बैल गाय और बकरियां हाट में बिकते रहे। दस भर का चावल उस ब्राह्मण को दो। काली बछवा गाय का है। धोतियों के जोड़ा खरीदे हैं। परिश्रमियों मनुष्यों का काम है। भारियां अशुद्धियां पकड़ गईं। वह कन्या सावधानी है। हंसता, खेलता, और कूदता बालक चले गये। उस स्त्री को पढ़ना लिखना नहीं भाती।

पाठ ९ । विशेष्यविशेषण (संख्यावाचक और संज्ञाप्रतिनिधिवाचक)

१ सम्बन्धकारक के चिह्न 'का' को, सादृश्यसूचक 'सा' को और संख्येय अथवा क्रमवाचक शब्दों के अन्त्य आकार को अपने २ सम्बन्धी विशेष्य के अनुसार (चाहे उनको विभक्ति प्रकाशित हो वा अप्रकाशित) एकार आदेश होता है; जैसे, उस लड़के के घर जाओ, व्याघ्र से भयानक पशु को कौन नहीं डरेगा; पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें छठें वा सातवें लड़के को बोलाओ।

(अ) स्त्रीलिङ्ग में आकार को ईकार आदेश होता है; जैसे, व्याघ्री सी भयानक; पहिली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठीं वा सातवीं लड़की इत्यादि।

२ संख्यावाचक व परिमाणवाचक विशेषण से जब बहुवचन को स्पष्ट देखलाना हो तो उनमें 'ओं' जोड़ दिया जाता है; जैसे, सैकड़ों पेड़ कट गये; मनों खांड़ बह गई इत्यादि।

३ आकारान्त संज्ञाप्रतिनिधि शब्द भी आकारान्त विशेषणों के सदृश विकार को प्राप्त होते हैं; जैसे, मेरा बालक; तेरे लड़के; उसकी कन्या; उनके नौकर इत्यादि।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों का शुद्ध करो—उस लड़का का भाई के विवाह में वह गया था। उस घोड़ा सा सुन्दर पशु आज तक देखने में नहीं आया। दूसरे लड़का की परीक्षा अभी हुई है। सातवां बालक का विषय में पूछ पाछ हुई है। उनका नाम का पता नहीं है। तीसरी दरजा के लड़का को पारितोषिक दिया जायगा। उनका पुत्र ने बड़ा भूल किया है। मेरा नौकर महंतजी ने बोलाया होगा। परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी चले गये। आप का बात कौन सुनते हैं। रामजी ने अयोध्या पहुँच कर राज्य करने लगे। सैकड़ा पशा बांट दिये गये। सेरों चांदी बेंच दी गई।

पाठ १० । गुणवाचक

१ हित, उचित, आवश्यक, नमस्कार इत्यादि के योग में सम्प्रदान कारक आता है; जैसे, तुम्हारे लिये हित, उचित, वा आवश्यक होगा; तुम्हें नमस्कार इत्यादि ।

२ अलग, बेमेल, भिन्न, बिलगाव, पूर्ण, भरा, रहित, भेंट, दूर, त्रस्त, चौकस, सन्तुष्ट, विस्मित इत्यादि गुणवाचक व इनके समानार्थक शब्दों और घिन लज्जा खेद भय इत्यादि संज्ञाओं के योग में अपादान कारक होता है; जैसे, 'भाई से अलग रहता है' इत्यादि ।

(अ) परिमाण, मूल्य, समय, अवस्था और समस्तता इत्यादि के बोधन में सम्बन्धकारक आता है; जैसे, चार हाथ का बांस-दो आने की चीनी-चार वर्ष की मीयाद-तीन महीने का लड़का-घर का घर खाली हो गया ।

३ अनुसार, सदृश, अधीन, सहित, योग्य, समीप, भूखा, प्यासा, प्यारा, ऐसा इत्यादि गुणवाचक शब्दों के योग से सम्बन्धकारक होता है; जैसे, आज्ञा के अनुसार, मोहन के सदृश, धनी के अधीन, पुत्र के सहित, कार्य के योग्य, गांव के समीप, बल का भूखा, खून का प्यासा, पिता का प्यारा इत्यादि ।

४ आलसी, ढीला, चतुर, निपुण, छोटा, बड़ा इत्यादि गुणवाचक शब्दों के योग से अधिकरण कारक होता है; जैसे, 'काम काज में आलसी मत हो' इत्यादि ।

(अ) निर्धारण अर्थ में और हेतु के प्रकाश करने में अधिकरण वा अपादान कारक होता है; जैसे, इनमें कौन उत्तम है; 'ऐसा उपाय रचो जिसमें वा जिससे वह पकड़ा जाय' इत्यादि।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में शुद्ध कारक की विभक्तियां लिखो- गोपाल—हेलमेल रक्खो। बालक—सदृश। लड़के—सहित। दुष्टों—भेंट हुई। पर्वत—दूर है। उस—समीप रहता है। मोहन—योग्य है। माता पिता—अलग रहता है। मालिक—अधीन रहना चाहिये। वह विद्याभ्यास-आलसी है। सोहन—भारी बिलगाव है। मैं उसके अपूर्व ज्ञान—विस्मित हुआ। लम्बाई—चौड़ा और चौड़ाई—छोटा होना चाहिये। वह व्यवहार—चतुर है। पात्र जल—पूर्ण है। वह चलने—ढीला है। बच्चा पिता—प्यारा है। सोहन भोजन—तृप्त हो गया। इस पदार्थ—वह भिन्न है। घर धूंए—भरा है। चोरों—चौकस रहो। गोपाल—बालक होना कठिन है। वह अपनी जीविका—सन्तुष्ट नहीं है। भाग्य—अनुसार वह धनोपार्जन भी करता है। वह प्रेम—भूखा है। तू तो मेरे खून—प्यासा है।

पाठ ११। संज्ञा, क्रिया और गुणवाचक।

१ जब अनेक संज्ञायें वा सर्वनाम एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रक्खें और उनके बीच कोई संयोजक शब्द न आवे तो उनको समानाधिकरण संज्ञा होती है; जैसे 'शुकदेव मुनि बोले' इत्यादि

(अ) वाक्य में विशेषण और क्रिया की समानता प्रायः मुख्य संज्ञा से नहीं होती किन्तु समानाधिकरण से होती है; जैसे, काशीनगर बड़ा है और तटपर बसा है-यहां 'बड़ा' और 'बसा' नगर से सम्बन्ध रखते हैं न कि मुख्य संज्ञा 'काशी' से।

२ वाक्य का सम्बन्धवाचक अवयव अपने परस्पर सम्बन्धी अवयव के पूर्व आता है; जैसे 'जो' लड़का अच्छा था 'सो' चला गया। 'सो' कभी 'वह' से पलट जाता है; जैसे, 'जो' लड़का अच्छा था 'वह' चला गया। 'सो' का कभी लोप हो जाता है; जैसे, जो मुझ से हो सकेगा मैं करूंगा।

३ संज्ञा का विशेषण वाक्य भी होता है जो सम्बन्धवाचक सर्वनाम से प्रारम्भ किया जाता है; जैसे, यह वही ग्रन्थ है जो मुझे परीक्षा में पारितोषिक मिला था'—यहां 'जो मुझे पारितोषिक मिला था' यह 'ग्रन्थ' का विशेषण है।

४ क्रिया का कर्त्ता अवश्य होता है चाहे प्रकाशित हो वा अध्याहृत; जैसे, क्या वह चला गया; देखो मुझे मिला नहीं-यहां देखो का कर्त्ता 'तुम' और 'मिला' का कर्त्ता 'वह' अध्याहृत है।

५ कर्त्ता की क्रिया भी प्रकाशित वा अध्याहृत रहती है; जैसे, मोहन जायगा और मैं भी (यहां 'जाऊँगा' अध्याहृत है)।

६ क्रियाओं से बने विशेषणों के लिङ्ग वचन विशेष्य के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं; जैसे, 'दौड़ते हुए घोड़े', 'बहती हुई नदी' इत्यादि।

७ जब वर्त्तमान काल की क्रिया के पूर्व 'नहीं' का प्रयोग होता है तब 'है' का प्रायः लोप हो जाता हैं; जैसे, मैं जाता हूं-मैं नहीं जाता।

(अ) निषेधात्मक वाक्यों में 'है' का प्रायः लोप हो जाता है; जैसे, 'उसमें क्रोध का लेश मात्र नहीं'; 'मेरे पास कुछ भी नहीं जो दूं' इत्यादि।

८ गुणवाचक भी क्रियाओं के विशेषण होते हैं; जैसे, 'वह सुन्दर लिखता है', 'वह अच्छा पढता है' इत्यादि।

उदाहरण। (१) नीचे लिखे वाक्यों में समानाधिकरण संज्ञाओं को बतलाओ-महाराज काशीनरेश आये। केशवदास कवि का रचा हुआ ग्रन्थ। हम बालकों का अपराध क्षमा कीजिये। अ'रा गांव पश्चिम में है। गङ्गा नदी में कई नदियां मिली है। हिमालय पहाड़ प्रायः सब से ऊंचा

है। भैरव कसेरा बड़ा परिश्रमी है। चांदनी चौक कहां है। दुर्गाघाट तक जाओ।

(२) नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो- अयोध्यापुरी सरयू पर बसा है। दिल्ली नगर पहिले राजधानी थी। जो चाहे लो। जो चाहे सो लो। जो चाहे वह लो। उसकी चलती हुई एक्का गड्हे में गिर गई। उसकी ठेला ठोकर खाने से टूट गई। आओ मैं नहीं खाता हूं। वह मीठा बोलता है। वह कड़ुआ कहता है।

(३) छ वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें वाक्य विशेषण रूप से आयें।

(४) छ वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें क्रियाओं के कर्त्ता अध्याहृत हों।

(५) छ वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें कर्त्ताओं की क्रियायें अध्याहृत हों।

(६) छ वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें क्रियाओं से बने विशेषणों के लिङ्ग वचन विशेष्यों के लिङ्ग वचन के अनुसार हों।

पाठ ९२। अव्यय

१ ऊपर कह आये हैं कि लिङ्ग वचन और कारक के कारण जिसका विकार न हो वह अव्यय है। इस कारण अव्यय के चार भेद और कहते हैं १ निपात, २ विभक्ति, ३ प्रत्यय और ४ उपसर्ग।

१ निपात

अव्यय के पांच प्रकारों का (अर्थात् क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, संयोजक, विभाजक और विस्मयादिबोधक का) वर्णन पहिले कर आये हैं। कुछ निपातों का विवरण नीचे लिखा जाता है।

१ 'और' 'औ' 'व' ये समुच्चायक हैं; जिन दो शब्दों वा वाक्यों के बीच में ये आते हैं उनको एक अवस्था में कर देते हैं; जैसे, वे बच गये और ये मर गये; मोहन और सोहन खेलते हैं।

(ख) ये 'साथ' का अर्थ देते हैं; जैसे, 'वह गया और मैं मरा'-अर्थात् 'साथ ही अथवा तुरन्त मरा; 'मैं हूं' और 'तुम हो'-अर्थात् 'साथ होऊँगा' अथवा 'पीछा न छाडूंगा'।

२ 'भी'-यह भी समुच्चायक है; जहां पूर्ववाक्य के पद से विशेषता कहनी होती है वहां वह आता है; जैसे, 'रुपये बांटे कपड़े भी'। अर्थात रुपये और कपड़े (दोनों) बांटे।

३ 'पुनि' 'फिर'-ये भी समुच्चायक हैं; जब एक क्रिया के हो चुकने पर दूसरी क्रिया की जाती है तब इनका प्रयोग किया जाता है; जैसे, 'उसने रोटी खाई फिर या पुनि पानी पिया' इत्यादि।

४ 'ही'-जिसके अन्त में आता है उसका निश्चयपन जताता है; जैसे 'मोती ही आवे'-अर्थात् दूसरा नहीं; 'मोती से ही पूछा' और 'मोती ही से पूछा' दोनों प्रकार से लिखने की चाल है।

५ 'क्या' 'क्यों' 'काहे को'—ये प्रश्न के स्थान में आते हैं; जैसे, 'क्या पढ़ते हो'; 'क्यों लड़ते हो'; 'काहे को बोलते हो' इत्यादि।

६ 'कुछ'—अज्ञात संख्या को जताने के लिये आता है; जैसे, 'मैं ने कुछ रुपया दिया' इत्यादि।

७ 'हां', 'जो' 'अच्छा', 'हूं'—ये स्वीकारबोधक हैं परन्तु 'हूं' में कुछ अपमान की झलक रहती है; जैसे, 'क्या तुम आज जाओगे?'-उत्तर 'हां' या 'जो'। 'क्या मैं चला जाऊँ'-उत्तर 'अच्छा'। 'क्या कुछ खफ़ा हो'—उत्तर 'हूं'।

८ 'साथ', 'समेत', 'सह'—ये संयुक्त का अर्थ देते हैं; जैसे, 'सोहन के साथ गया'; 'कपड़ा लत्ता समेत डूब गया'; 'वह पुरुष गोपाल का सहगामी हुआ' इत्यादि।

९ 'कि'-यह दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध देखलाता है अर्थात् पहिले कही हुई बात का वर्णन करता है। इसके पूर्व की क्रिया का इसके आगे का वाक्य कर्म होता है; जैसे, मोहन ने कहा कि मैं आऊंगा। कभी २ इसी वाक्य में तत्क्षय का द्योतक होता है; जैसे, 'मैं देखता ही था कि वह आ गया'। कभी २ इसका अर्थ सन्देह सूचक होता है; जैसे, 'उसने दिया हो कि न दिया हो'। कभी २ निर्णय के लिये प्रश्न में प्रयुक्त होता है; जैसे, यह है कि वह?। कभी २ वाक्य में सूचित विषय का निरूपण करने के लिये 'इसलिये' इस शब्द का प्रयोग करते हैं परन्तु उस विषय के आरम्भ सूचन में 'कि' का प्रयोग उसके पहिले करते हैं; जैसे, 'वह इसलिये नहाता है कि ग्रहण लगा है'। कहीं वाक्यालङ्कार में भी 'कि' का प्रयोग किया जाता है; जैसे, 'जब कि वह गया था'; 'न कि यह' इत्यादि।

१० 'पर' 'परन्तु' 'किन्तु' 'सिवाय'-जो कहा जाता है उसके सन्देह की निवृत्ति के लिये ये आते हैं अथवा ये दो विपरीत वाक्यों के बीच आते हैं; जैसे, सब आये पर (परन्तु, किन्तु) मोहनलाल नहीं आये; सब आये सिवाय मोहनलाल के।

११ 'यदि'-यह उपाधि (शर्त्त) के अर्थ में बोला जाता है; जैसे, यदि विष खायगा तो मर जायगा।

१२ 'यद्यपि'-यह 'होने वा रहने पर' का अर्थ देता है; जैसे, 'यद्यपि सामने था 'तथापि' (तौ भी) देखाई दिया'-सामने रहने पर भी देखने में नहीं आया। 'तथापि' और 'तौभी' ये 'यद्यपि' के परस्पर सम्बन्धी हैं।

१३ 'या', 'वा', 'चाहे', 'नहीं तो'-इनसे अनिश्चय सूचित होता है; जिनके बीच ये आते हैं उनमें से एक को लेना

होता है दूसरे को छोड़ना ; जैसे, 'कुत्ता या (वा, चाहे, नहीं तो) बिल्ली' इत्यादि।

१४ 'जो तो'–ये परस्परान्वयी हैं–'जो' प्रतिज्ञा के साथ और 'तो' अनुमान के साथ आता है ; जैसे, 'जो अधिक जल बरसेगा तो अन्न भी अधिक उपजेगा' इत्यादि।

१५ 'अर्थात्'–यह अर्थ स्पष्ट कर देने के लिये आता है ; जैसे, 'सब से बड़ा पशु अर्थात् हाथी' इत्यादि।

१६ 'मानो'–यह उत्प्रेक्षा के लिये आता है; जैसे, ऐसा श्वेत मानो बर्फ़। एक वस्तु को दूसरी वस्तु ठहराना 'उत्प्रेक्षा' कहलाता है।

१७ 'बरन'–पहिले पद से दूसरे पद में कुछ घट बढ़ देखलाना होता है तो इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे 'बड़ा कड़ा है बरन पत्थर है' इत्यादि।

१८ 'सा' 'से', 'सी'–ये उपमा के लिये आते हैं ; जैसे, वह मनुष्य शेर सा बहादुर है ; वह पुत्री राजकन्या सी है' ; 'ये घोड़े गदहे से हैं' इत्यादि।

१९ 'अकस्मात्' 'दैवात्'–ये उस स्थान पर आते हैं जहां संयोग से विना बिचारे कोई बात हो जाय ; जैसे, 'वह अकस्मात् (दैवात्) उठ खड़ा हुआ।

२० 'हैं'–यह झिड़की के अर्थ में आता है ; जैसे, 'हैं', ऐसा कहते हो, चुप रहो'।

२१ 'कभी'–अस्वीकार को निश्चय कराने के लिये आता है ; जैसे 'मैं कभी न बोलूँगा।'

२२ 'एक'–यह अनिश्चय प्रगट करने के लिये आता है ; जैसे, 'एक आदमी बोल उठा'।

२३ 'अतएव'-यह परिणाम दिखलाने के लिये आता है ; जैसे, 'उसने झूठ कहा अतएव दंड पाया'।

२४ 'कु', 'दुर्'-ये बुरे के अर्थ में आते हैं ; जैसे, 'कुरूप', 'दुर्जन' इत्यादि।

२५ 'सु'-यह अच्छे के अर्थ में आता है ; जैसे, 'सुरूप' इ०।

---

२ विभक्ति।

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध और अधिकरण के भेद से विभक्तियां ७ प्रकार की होती हैं।

(१) 'ने' कर्त्ता का चिह्न है और वाक्य में कर्तृप्रधान सकर्मक सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत की क्रियाओं के साथ प्रयोग पाता है ; जैसे, मैं ने पढ़ा ; मैं ने पढ़ा है ; मैं ने पढ़ा था ; मैं ने पढ़ा होगा।

(२) 'को', 'के तईं', 'ए'-ये कर्म के चिह्न हैं-पहिले दो संज्ञा के साथ आते हैं और तीसरा बहुधा सर्वनाम के साथ ; कभी २ ये चिह्न छिपे रहते हैं ; जैसे, 'बालक को' ; 'मनुष्य के तईं' ; उसे कुछ दे दो जिसे बोलाया था ; पाठ पढ़ो (अर्थात् पाठ को पढ़ो)।

(३) 'से' करण कारक का चिह्न है ; जैसे, उसको छुरी 'से' कलम बनाया। 'द्वारा' शब्द भी करण कारक के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है ; जैसे, काम मंत्री द्वारा सिद्ध होगा।

(अ) 'से' कभी कर्म के चिह्न के लिये आता है; जैसे, दाता से (अर्थात् 'को') कहो। कभी 'के साथ' के अर्थ में आता है; जैसे, वह बड़ी भीड़ भाड़ से (अर्थात् के साथ) आया।

(इ) 'से' कभी कारण के अर्थ में आता है ; जैसे, 'लज्जा से भागा' इत्यादि।

(ढ) 'से' के स्थान में कभी २ 'मारे' आता है-'मारे' से अधिकता सूचित होती है; जैसे, जाड़ा के 'मारे' (अर्थात् अधिकता से) बेहोश हो गया।

(ण) कभी २ करणकारक की विभक्ति नहीं आती; जैसे, भूखों मरा, न आंखों देखा न कानों सुना।

(४) 'के लिये' और 'को' सम्प्रदान कारक के चिह्न हैं; जैसे, लड़की 'के लिये' गुड़िया लाओ; कपड़ा मोल लेने को (अर्थात् 'के लिये') बाज़ार गया।

(अ) 'को' कभी 'की तरफ़' या 'ओर' के लिये आता है; जैसे, पूरब को (अर्थात् 'की तरफ़') गया।

(इ) हित, हेतु, कारण इत्यादि शब्द भी सम्प्रदान का अर्थ देते हैं; जैसे, 'किस हित, हेतु वा कारण यत्न करते हो' इत्यादि।

(५) 'से' अपादान कारक का चिह्न है; जैसे, उसकी छुरी हाथ 'से' गिर गई।

(६) 'का' 'के' 'की'-ये सम्बन्धकारक के चिह्न हैं जो लिङ्ग और वचन के अनुसार आते हैं; जैसे, मनुष्य का घोड़ा; स्त्री की पालकी; लड़कों के खेल।

(अ) ये चिह्न शब्दों की पुनरुक्ति के बीच में आ के सम्पूर्णता और बहुतायत का अर्थ देते हैं; जैसे, गांव का गांव (अर्थात् सारा गाँव); जंगल के जंगल (अर्थात् बहुतेरे जङ्गल); रात की रात (अर्थात् रात भर)।

(इ) अस्वीकारबोधक क्रिया के अन्त में 'का' का 'कदापि' अर्थ भविष्यत् के साथ होता है; जैसे मैं नहीं जाने का (अर्थात् कदापि नहीं जाऊंगा)।

(उ) 'के' कभी कर्म के चिह्न 'को' की जगह आता है; जैसे, उसके (अर्थात् उसको) चोट लगी।

(ऊ) 'का' कभी करण के चिह्न 'से' की जगह आता है जैसे, रुपये का (अर्थात् रुपये से) मोल लिया।

(७) 'में' 'पर' ये अधिकरण कारक के चिह्न हैं; जैसे, बच्चा घर में वा कोठे पर खेलता है। कभी 'में' और 'पर' छिपे हुए रहते हैं; जैसे, घर गया अर्थात् घर 'में' या 'पर' गया।

(अ) 'में' वाक्य में दो बार आने से आरम्भ और समाप्ति का अर्थ देता है; जैसे, मुझमें तुझमें क्या तफ़ावत है (अर्थात् मुझसे तुझतक क्या तफ़ावत है)।

(इ) 'पर' कभी कर्म का चिह्न होता है; जैसे, मुझपर (अर्थात् को) अत्याचार किया। कभी 'के ऊपर' का अर्थ देता है; जैसे, कोठे पर (अर्थात् 'के ऊपर') है। कभी 'परन्तु' का अर्थ देता है; जैसे, उसने समझाया पर (अर्थात् परन्तु) उसने न माना।

(उ) 'तक' और 'लगि' समापक के चिह्न हैं; जैसे, सड़क तक; जब लगि आवउँ सीतहि देखी।

---

३ प्रत्यय।

१ जो निष्केवल आप कुछ अर्थ नहीं रखता पर प्रकृति (मूल शब्द) के उत्तर लगने से विशेष अर्थ बोधित करता है वह प्रत्यय कहाता है।

२ प्रत्यय प्रायः तीन प्रकार के हैं—स्त्रीप्रत्यय, तद्धितप्रत्यय और कृदन्तप्रत्यय।

(१) स्त्रीप्रत्यय।

१ पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिये जिस प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है उसको स्त्रीप्रत्यय कहते हैं। कभी २

स्त्रीप्रत्यय के योग से शब्द में लघुता का भाव निकलता है; परन्तु ऐसे शब्द के लिये वाक्य में स्त्रीलिङ्ग की क्रिया आती है इससे इसको स्त्रीलिङ्गही कहते हैं।

२ स्त्रीप्रत्ययों का वर्णन 'लिङ्ग' के प्रकरण में हो चुका है इसमे यहां उसको दोहरा कर लिखने की आवश्यकता नहीं है।

—...—

(२) तद्धितप्रत्यय।

१ संज्ञा वा अव्यय के उत्तर लग कर संज्ञा बनानेवाला प्रत्यय तद्धितप्रत्यय कहाता है। तद्धितप्रत्यय एक प्रकार की संज्ञा को दूसरे प्रकार की संज्ञा बना देता है।

२ हिन्दी में प्रचलित तद्धितप्रत्यय बहुधा पांच वा छ प्रकार के हैं—अपत्यवाचक, व्यापारादिवाचक, भाववाचक, विद्यमानतादिवाचक, अल्पतादिवाचक और अधिकतादिवाचक।

१ अपत्यवाचक

अ ई इत्यादि अपत्यवाचक प्रत्यय से पुत्रादि सन्तान जाना जाता है।

(१) वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर को दीर्घ करने से बनते हैं; जैसे——

जनक से जानकी	वसिष्ठ से वासिष्ठ	वसुदेव से वासुदेव
पर्वत से पार्वती	कश्यप से काश्यप	दशरथ से दाशरथ
		वा दाशरथि

२ वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर की वृद्धि और अन्त्य अक्षर के 'उ' को 'अव' आदेश करने से बनते हैं; जैसे-

शिव से शैव	रघु से राघव	मनु से मानव	यदु से यादव
विष्णु से वैष्णव	मधु से माधव	कुरु से कौरव	भृगु से भार्गव

३ वे अपत्यवाचक जो अन्त्य अक्षर के स्वर को 'ई' आदेश करने से बनते हैं; जैसे—

कबीरपंथसेकबीरपंथी	बंगालसेबंगाली	पंजाब से पंजाबी
दयानन्द से दयानन्दी	नेपालसेनेपाली	रामानन्दसेरामानन्दी

४ वे अपत्यवाचक जो शब्द के अन्त में 'ज' के योग से बनते हैं; जैसे——

पिंड से पिंडज	पंक से पंकज	जल से जलज
अंड से अंडज	स्वेद से स्वेदज	अग्र से अग्रज

५ वे अपत्यवाचक जो आदि स्वर की वृद्धि इ० और अन्त्य अक्षर के स्थान में दूसरे अक्षर के आदेश इ० से बनते हैं;जैसे-

सुमित्रा से सौमित्र	अदिति से आदित्य	कुन्ती से कौन्तेय
देव से दैव	गर्ग से गार्ग्य	पञ्चाल से पाञ्चाल
विनता से वैनतेय	गोतम से गौतम	

गो से गव्य (गाय से उत्पन्न वस्तु)

६ 'इक','इन' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगाने में सम्बन्ध का अर्थ निकलता है ; जैसे—

मानस से मानसिक	संसार से सांसारिक	ग्राम से ग्रामीण
संवत् से सांवत्सरिक	वर्ष से वार्षिक	मास से मासिक

२ व्यापारादिवाचक

संज्ञावाचक शब्द के अन्त में 'वाला' 'हारा' 'इया' 'इक' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगने से बहुधा उसका व्यापारी और स्वामी जाना जाता है ; जैसे —

दूध से दूधवाला	चूड़ी से चुड़िहारा	लकड़ी से लकड़िहारा
गाड़ी से गाड़ीवाला	माखन से मखनिया	आढ़त से अढ़तिया
धन से धनिक	स्थान से स्थानिक	धर्म से धार्मिक

समाज से सामाजिक (समाज का रक्षक)

३ भाववाचक

भाववाचक से किसी का भाव समझा जाता है। भावबोधनार्थ संज्ञाओं और गुणवाचकों के अन्त में प्रत्यय जोड़ते हैं; जैसे, आई—चतुराई, पंडिताई, ललाई। ई—भलाई, सुधाई, लड़िकाई। त्व—दासत्व, मनुष्यत्व, प्रभुत्व। पन-छोटापन, लड़कपन, भोलापन। ता—सुन्दरता, सज्जनता, उत्तमता। पा—बुढ़ापा, रंडापा, पुजापा।

४ विद्यमानतादिवाचक

जिस वस्तु की विद्यमानता इत्यादि अर्थ बोध्य होते हैं उस वस्तु के वाचक शब्द के उत्तर 'मान्' 'वान्' 'मन्त' 'वन्त' 'ई' 'आलू' 'लु' 'आ' 'ईला' 'इत' 'ईय' 'इया' 'शाली' 'वी' इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं; जैसे—

मान्-श्रीमान्, बुद्धिमान्। वान् रूपवान्, गुणवान्, शिखावान्।
वन्त-कुलवन्त, गुणवन्त, शीलवन्त। मन्त-हनुमन्त, श्रीमन्त।
ई-सुखी, दरिद्री, दण्डी। आलू-झगड़ालू। लु-दयालु, कृपालु।
आ-भूखा, प्यासा। ईला-सजीला, चमकीला, भड़कीला,
इत-हर्षित, आनन्दित, दुखित
नीय-आदरणीय। इया-बखेड़िया, झमेलिया
शाली-भाग्यशाली। वी-मायावी, यशस्वी

२ जो जहां का होता है वह वहां के वाचक शब्द के उत्तर 'अ' 'ई' 'एला' 'एलू' 'ईय' इत्यादि प्रत्यय के लगने से बनता है; जैसे—

अ-नगर से नागर। ई-बनारस से बनारसी। लाहौर से लाहौरी। एला-गांव से गंवेला, बन से बनैला। 'एलू'-घर से घरेलू। 'ईय'-भारतवर्ष से भारतवर्षीय, पर्वत से पर्वतीय।

३ 'तुल्य' अर्थ में 'वत्' प्रत्यय लग के अव्यय शब्द निष्पन्न होता है ; जैसे, पशुवत् इत्यादि ।

४ 'बना' इस अर्थ में 'ई' 'मय' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं; जैसे, ऊनी, सूती, लोहमय, मृत्तिकामय, गोमय (गोबर), आम्रमय (आम्र का विकार वा अवयव) इत्यादि ।

५ अल्पतादिवाचक

अल्पता आदि अर्थ के बोधनार्थ 'ड़ी' प्रत्यय, प्यार का द्योतक 'क' प्रत्यय और अनादर का द्योतक 'आ' प्रत्यय बहुधा लगाया जाता है ; जैसे, ड़ी-पलंगड़ी, कुल्हाड़ी । क-पुत्रक, ठंडक । आ-टहलुआ, मतलुआ ।

६ अधिकतादिवाचक

अधिकता आदि के बोधनार्थ 'अ' वा 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है; जैसे, अ-धार, नद । आ-घंटा, रस्सा, कलसा ।

---

(३) कृदन्तप्रत्यय

१ जो प्रत्यय धातु से परे आ के क्रिया के कर्त्ता आदि अर्थ का बोध करते हैं वे कृत् प्रत्यय कहाते हैं । कृत् प्रत्यय के लगने से जो संज्ञा बनती है वह कृदन्तसंज्ञा कहलाती है । वह कृदन्तसंज्ञा क्रियानुगतभाव को प्रकाश करती है ।

२ भाषा में कृदन्त संज्ञा पांच प्रकार की प्रचलित है—कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक व क्रियाद्योतक ।

१ कर्तृवाचक

कर्तृवाचककृदन्तसंज्ञा वह है जिसमें कर्त्तापन का बोध होता है । क्रिया के चिह्न 'ना' को 'ने' करके उसके उत्तर 'वाला' वा 'हारा' प्रत्यय के जोड़ने से यह कृदन्तसंज्ञा बनती है ; जैसे—

बोलनेवाला	हांकनेवाला	जोतनेवाला	काटनेवाला
खानेहारा	देनेहारा	सोनेहारा	बेचनेहारा

(ग) क्रिया के चिह्न 'ना' का लोप करके धातु के अन्त्य 'अ' के स्थान में 'अक' 'इया' 'अवैया' आदेश करने से यह कृदन्तसंज्ञा बनती है; जैसे—

पूजक पालक जड़िया लखिया करवैया बोलवैया

(इ) जहां धातु का अन्त्य वा उसके आदि अक्षर का स्वर दीर्घ हो वहां उसको ह्रस्व करके तब 'अवैया' आदेश करते हैं; जैसे—

गवैया खवैया सुनवैया जितवैया पिसवैया भरवैया

(उ) कर्त्ता अर्थ में 'ता' 'ई' 'मान' 'क' इत्यादि प्रत्यय हैं; जैसे—दाता भाषी विराजमान सेवक इत्यादि।

(ऋ) वर्त्तमानकाल का कर्त्ता बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'ता' अथवा 'ता हुआ' इतना जोड़ देते हैं और भूतकाल का कर्त्ता बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'आ' या 'या' अथवा 'आ हुआ' वा 'या हुआ' इतना जोड़ देते हैं; जैसे—

खाता	हंसता	खेलता	जागता
खाता हुआ	हंसताहुआ	खेलताहुआ	जागता हुआ
खाया	सोया	बोया	दिया वा दिआ
खाया हुआ	सोया हुआ	बोया हुआ	दिया(वादिआ)हुआ

(२) कर्मवाचक

कर्मवाचक कृदन्तसंज्ञा वह है जिसमें कर्मत्व का बोध होता है। क्रिया के सामान्यभूतकाल के रूप में 'जानेवाला' वा 'जानेहारा' इतना जोड़ देने से कर्मवाचक संज्ञा बनती है; जैसे-खाया जानेवाला, पिया जानेहारा, बोया जानेहारा, दियाजानेवाला।

(ग) 'वाला' या 'हारा' ये दोनों प्रत्यय कभी भविष्यकाल के कर्तृत्व आदि के बोधनार्थ भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे, "कल मैं जौनपुर जानेवाला या जानेहारा हूं" इत्यादि।

(घ) क्रिया के सामान्यभूतकाल के रूप के उत्तर 'जाता' वा 'जाता हुआ' इतना लगा देने से वर्त्तमानकाल के कर्म की वाचिका संज्ञा बनती है और यथोक्त भूतकाल के रूप के उत्तर 'गया' वा 'गया हुआ' इतना लगा देने से भूतकाल के कर्म की वाचिका संज्ञा बनती है; जैसे——

खाया जाता खाया जाता हुआ खाया गया हुआ

(ङ) सकर्मक धातु के सामान्यभूतकाल का रूप भी साक्षात् कभी २ कर्मवाचक संज्ञा के आकार में प्रयुक्त होता है; जैसे——

खाया अन्न पिया पानी पढ़ी विद्या लिखी चिट्ठी

(१) प्रस्तुत प्रयोग के स्थल में कभी २ 'हुआ' इतना और भी जोड़ दिया जाता है; जैसे—दैव का मारा हुआ।

(च) कभी २ क्रियाद्योतक संज्ञा के भी आकार में कर्मवाचक संज्ञा होती है; जैसे-ओढना बिछावना इत्यादि।

(१) लघुत्वादि अर्थ बोधित करने के लिये बहुधा पुंलिङ्ग संज्ञा का स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग करते हैं; जैसे-ओढ़ना बड़ा होता है और ओढ़नी छोटी।

३ करणवाचक

करणवाचक कृदन्तसंज्ञा उसे कहते हैं जिससे करणत्व ज्ञात होता है। कोई २ करणवाचक कृदन्तसंज्ञा क्रियाद्योतक कृदन्त संज्ञा के ही रूप में होती है; जैसे——

ढकना ओढ़ना घोटना बेलना

(१) कभी २ प्रस्तुत संज्ञा नियत स्त्रीलिङ्ग होती है; जैसे—

कतरनी कुरेलनी खोदनी

(ख) कभी २ 'इत्र' यह प्रत्यय कर्म वा करणवाचक संज्ञा बनने में प्रयुक्त होतो है; जैसे—चरित्र पवित्र खनित्र।

४ भाववाचक

भाववाचक कृदन्तसंज्ञा उसे कहते हैं जिससे शुद्ध धात्वर्थ वा भाव का बोध होता है। इसके बनाने की रीतियां नीचे लिखी जाती हैं—

(१) बहुत करके धातुओं के आकार में भाववाचक कृदन्त संज्ञा होती है; जैसे—

मार पीट लूट पुकार समझ बूझ सूजन

(२) कहीं २ क्रियाद्योतक संज्ञा के चिह्न 'ना' को 'न' और कहीं 'ना' को 'नी' कर देने से यह संज्ञा बनती है; जैसे—लेन देन खान पान करनी भरनी इ०।

(३) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' को 'आव' आदेश कर देने से यह संज्ञा बनती है; जैसे—बचाव चढ़ाव बिकाव मिलाव झुकाव लुटाव इ०।

(४) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' को 'आई' आदेश कर देने अथवा 'आई' जोड़ देने से यह संज्ञा बनती है; यदि धातु के आदि अक्षर का स्वर दीर्घ हो तो उसको ह्रस्व कर देते हैं; जैसे—पढ़ाई लिखाई जोताई बोआई भराई सिंचाई देखाई इ०।

(५) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' के स्थान में 'आवट' 'आहट' 'ई' इत्यादि आदेश करने से स्त्रीलिङ्ग में यह संज्ञा बनती है; जैसे—सिखावट चिल्लाहट बनावट झनझनाहट फेरी हंसी इ०।

(६) कहीं २ धातु के उत्तर 'त' वा 'ती' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिङ्ग में और धातु के अन्त्य 'अ' के स्थान में 'आ' वा 'आप' वा 'आव' आदेश करने से पुंलिङ्ग में यह संज्ञा बनती

है ; जैसे--बचत खपत बढ़ती घटती छापा मिलाप जुटाव फैलाव इत्यादि ।

(७) कहीं २ धातु के आदि अक्षर को दीर्घ कर देने से यह संज्ञा बनती है ; जैसे--चल से चाल ; ढल से ढाल इ० ।

(८) कहीं २ धातु के चिह्न 'ना' का लोप कर देने से यह संज्ञा बनती है; जैसे-बोल मान समझ पुकार चाह इ० ।

५ क्रियाद्योतक

क्रिया का भाव बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'ना' यह प्रत्यय लगाने से जो संज्ञा निष्पन्न होती है वह क्रियाद्योतक कृदन्तसंज्ञा कहाती है ; जैसे—कहना खेलना हंसना रोना गाना बजाना इ० ।

(१) क्रियाद्योतक कृदन्तसंज्ञा भाववाचक कृदन्तसंज्ञा का ही भेद है । शुद्ध धात्वर्थरूपी भाव के बोधन में इसका विशेष उपयोग देख पृथक् उल्लेख कर दिया है ।

(४) उपसर्ग ।

१ प्रादि*अव्यय शब्द जब क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त हो कर कभी उस (क्रिया) के स्वार्थ को और कभी उसके भिन्न ही अर्थ को द्योतित करते हैं तब इन्हें उपसर्ग कहते हैं ; जैसे, विराजमान इत्यादि ।

२ कहीं दो कहीं चार उपसर्ग एकत्र प्रयुक्त होते हैं; जैसे, विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समभिव्याहार इत्यादि ।

३ उपसर्ग के प्रधान अर्थ या भाव जो उसके योग से निकलते हैं वे नीचे लिखे जाते हैं—

अति—अतिशय ; जैसे, अतिगुप्त ।

---

* प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि प्रति, परि, उप-ये प्रादि हैं ।

अधि—अधिकता, उपरिभाव, स्वामित्व; जैसे, अधिकार, अध्याहार, अधिराज।
अनु—पीछे, सादृश्य; जैसे, अनुगामी, अनुताप, अनुरूप।
अन्तर—भीतर; जैसे, अन्तर्धान।
अप-हीनता, त्याग, वैरूप्य; जैसे, अपवाद, अपमान, अपरूप।
अभि—चारो ओर से, सम्मुख, प्रधानता, समीपता; जैसे, अभिमत, अभिमान, अभिभावक, समभिव्याहार।
अव—अनादर, नीचता; जैसे, अवहेला, अवनति।
आ—सीमा, ग्रहण, विरोध; जैसे, आजीम, आदान, आक्रमण।
उत्—ऊपर, उत्कर्ष; जैसे, उन्नति, उद्गार।
उप-समीपता, निकृष्टता; जैसे, उपस्थिति, उपासङ्ग (पसँगा)।
दुः—दुष्टता, कष्ट, निन्दा; जैसे, दुर्योग, दुर्गम, दुर्वाद।
नि-निषेध, अवरोध अत्यन्त; जैसे, निवारण, निरोध, निरूप।
निः—निषेध, बाहर होना; जैसे, निश्चल, निर्याण।
परा—प्रतिघात, विरोध; जैसे, पराजय पराङ्मुख।
परि—सर्वतोभाव, अतिशय, जैसे, परिवार, परिपूर्ण।
प्र—प्रकर्ष, अतिशय, गति; जैसे, प्रज्ञान, प्रयत्न, प्रचार।
प्रति—बदले में, प्रत्येक, सादृश्य; जैसे, प्रतिनिधि, प्रत्यगात्मा, प्रतिरूप, प्रतिकृति, प्रतिमा।
वि—भिन्नता, विशेषता; जैसे, वियोग, विशेष।
सम्—संयोग, आभिमुख्य, उत्तमता, आधिक्य; जैसे, समागम, संवाद, समीचीन, संस्कृत, सञ्चार।
सु—उत्तमता, सुगमता; जैसे, सुधार, सुलभ।

———

पाठ १३। विरामचिह्न

१ वाक्य में पदार्थों के अन्वय को स्पष्ट रूप से निश्चय करने के अर्थ वक्ता यथोचित स्थान में, परिमिति रूप से उच्चारण में, विश्राम करता है उसे 'विराम' कहते हैं। लिखने में विराम के सूचक कुछ सङ्केतित चिह्न हैं उन्हें 'विरामचिह्न' कहते हैं।

२ हिन्दी में '।' इस विरामचिह्न को छेवा कहते हैं। वाक्य की समाप्ति में छेवा लिखा जाता है। 'एक' इस शब्द के उच्चारण में जितना काल लगता उतने काल का विराम छेवे से द्योतित होता है। महावाक्य जिसमें अनेक छोटे वाक्य हैं उसकी समाप्ति में ऐसे दो छेवे लिखते हैं जिससे ऊपर उक्त विराम द्विगुणित बोधित होता है।

३ ऊपर देखलाये हुए विरामचिह्नों के अतिरिक्त विरामचिह्नों के लिखने की परिपाटी हिन्दी में नहीं है पर अंगरेज़ी में अवान्तर वाक्यों तथा वाक्यांशों में विच्छेद बोधित करने के लिये और भी कई एक विरामचिह्न नियत हैं। अंगरेज़ी में न केवल विरामचिह्न मात्र के लिखने की रीति है वरन प्रश्न सम्बोधन आश्चर्य अविच्छेद आदि का बोध करने के लिये लिखने में पृथक् २ सङ्केतचिह्न सङ्केतित हैं।

४ अंगरेज़ी में (कामा,) यह चिह्न वाक्यांश विराम का है इसलिये इसको 'अंशविराम' कहते हैं; जैसे, राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न महाराज दशरथ के पुत्र थे; सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म, भक्ष्य और अभक्ष्य, पेय और अपेय

☞ अति आदि अव्यय संज्ञा के साथ भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे, अतिकाल, नित्यप्रति, प्रतिदिन, आप के प्रति, अधिमास, अधिरथ, अपयश, अपलक्षण, विलक्षण, अभिमुख, अवगुण, उपवन, सुपुत्र, विदेश इत्यादि शब्दों में।

का सदा विचार रखना चाहिये । कभी २ अन्त के दो शब्द के बीच अंशविराम को नहीं लिखते, 'और' इस शब्दही का प्रयोग करते हैं; जैसे, कुत्ते, बिल्लियां, घोड़े, गदहे और ऊँट सब देखे पड़े ।

५ (सेमिकोलन ;) यह अर्द्धविराम का चिह्न है । वाक्य में जहां से अर्थ अलग हो वहां इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे, सोहन खेल रहा है ; जान पड़ता है वह पाठशाले न जायगा । उदाहरण देखलाने के लिये 'यथा' वा 'जैसा' शब्द का प्रयोग करते हैं-'यथा' वा 'जैसा' के पूर्व अर्द्धविराम और उत्तर 'अंशविराम' लिखना उचित है ।

६ छेवे के पलटे अंगरेजी में (फुलस्टाप.) यह बिन्दु चिह्न दिया जाता है इसको पूर्णविराम कहते हैं । महावाक्य के विराम में भी अंगरेजी में यही लिखा जाता है ।

७ एक वाक्य लिख के जब उसका ब्योरा आगे लिखा जाता है तब जिस वाक्य का ब्योरा करते हैं उसके अन्त में (कोलन :) इस चिह्न को लिखते हैं इसलिये इस चिह्न को प्रायः विहृतिविराम कहते हैं ; जैसे, जगत् खेत है: इसमें जो जैसा बोता है वह वैसा लवता है ।

८ पूर्णविराम के तुल्यपरिमाण विराम करने पर भी जब आगामी वाक्य के साथ कुछ अन्वय की विवक्षा रहती है तब वाक्य में विच्छेद बोधनार्थ 'पूर्णविराम' के पलटे (डाश)— एतादृश चिह्न लिखते हैं ; इस चिह्न को 'विच्छेदकविराम' कहते हैं ; जैसे, यहां की भूमि उर्वरा है—वाह ! जिसकी भूमि है वह बड़ा भाग्यवान् है ।

(ष) 'निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो--' ऐसे २ स्थलों के उत्तर 'विच्छेदकविराम' चिह्न लिखते हैं । कभी २

ऐसे स्थलों में विच्छेदकविराम के पूर्व 'विवृतिविराम' चिह्न भी लिखते हैं; जैसे, 'निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो:–'।

९ "" वा '' ये चिह्न उल्लेख के उद्धारबोधक हैं–इनको 'युगलपाश' कहते हैं; जैसे, राजा ने कहा, "मैं आज शिकार करने न जाऊँगा"। जब कभी उल्लेख और अवान्तरोल्लेख दोनों को आवश्यकता होती है तब उल्लेख के लिये "" ऐसे चिह्न और अवान्तरोल्लेख के लिये '' ऐसे चिह्न लिखते हैं; जैसे, ब्राह्मण ने कहा, "आज एक अभियोग में मेरी साखी है इससे 'नहिं असत्य सम पातक पुंजा' मैं असत्य न बोलूंगा"। वाक्य में शब्द की प्रसिद्धि जताने के लिये उसको युगलपाश के भीतर लिखते हैं; जैसे, 'अच्छा' इस शब्द का प्रयोग 'बालक' इस शब्द के पूर्व करो।

१० प्रश्नचिह्न '?' ऐसा लिखा जाता है। प्रश्नात्मकवाक्य के उत्तर इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे, कहाँ से आये?।

११ अव्यवहित पूर्व पद की व्याख्या के लिये प्यारनथिसीज़ ( ) यह कोष्ठक का चिह्न लिखा जाता है। कोष्ठक के भीतर लिखा अंश प्रस्तुत वाक्य का अंश नहीं माना जाता अतएव उसे त्याग के बांचने में भी वाक्यार्थ के बोध में बाधा नहीं होती; जैसे, उसके पुत्र का विवाह (एक भारी उत्सव) माघ मास में होगा।

१२ सम्बोधन वा विस्मयादि का बोधक चिह्न '!' यह है; जैसे, मोहन! वाह! वाह! ऐसे पद को जब द्विरुक्ति वा त्रिरुक्ति की जाती है तब इसके लिखने का यह क्रम है; प्रथमोच्चारित पद के उत्तर एक बार, मध्यमोच्चारित पद के उत्तर दो बार और अन्त में उच्चारित पद के उत्तर तीन बार विस्मयादि बोधकचिह्न को लिखते हैं; जैसे, हा! हा!! हा!!!

१३ वाक्यार्थ के बोध में गड़बड़ न पड़ने पावे इस लक्ष्य से वाक्य के प्रत्येक पद का विच्छेद करके लिखते हैं; एतादृश विच्छेद को 'प्रश्लेष' कहते हैं। प्रश्लेष के निषेध का सूचक चिह्न (हाइफ़न् -) कहाता है। इसको 'आड़ा छेवा' भी कहते हैं।

(अ) पंक्ति पूरी होने पर जब पूरा पद न लिखा गया तो पद के अवयव को अलग देखलाने के लिये-यह चिह्न आता है।

१४ शब्दों को संक्षेप करके लिखने के लिये उसके प्रथम अक्षर को ले के उसके आगे शून्य के सदृश बिन्दी देने की चाल है; जैसे, इत्यादि का इ०, संवत् को सं० इत्यादि।

१५ शब्द के आगे जो अङ्क दिया जाता है उतनीही बार वह शब्द समझा जाता है; जैसे, अच्छे अच्छे लड़के = अच्छे २ लड़के इत्यादि; श्री श्री श्री श्री श्री = श्री ५ इत्यादि।

१६ जिन दो अक्षरों वा पदों में समानता देखलानी हो उनके बीच = यह चिह्न आता है। इसको बराबर का चिह्न कहते हैं।

१७ यह + जोड़ वा धन का चिह्न है; यह — बाकी वा घटाना का चिह्न है; यह × गुणन का चिह्न है; यह ÷ भाग का चिह्न है।

पाठ १४। पदान्वयविधि

पदान्वय से शब्दों का भेद और उनका परस्पर सम्बन्ध जाना जाता है।

☞ विभक्तिसहित शब्द को पद कहते हैं परन्तु यहां पर अर्थबोधक शब्द मात्र को पद समझना चाहिये। कोई लोग पदान्वय को पदभंजन वा पदव्याख्या वा पदपरिचय कहते हैं।

१ संज्ञा हो तो स्वरूपतःभेद, अर्थतःभेद, लिङ्ग, वचन, कारक और क्रियादि के साथ अन्वय कहो।

२ विशेषण हो तो उसका भेद, लिङ्ग, वचन और विशेष्य कहो।

३ सर्वनाम हो तो उसका भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक और क्रियादि के साथ उसका अन्वय कहो तथा जिसके पलटे वह आया हो उसे बताओ।

४ क्रिया हो तो उसका भेद, काल, भाव, पुरुष, लिङ्ग, वचन और कारक के साथ उसका अन्वय कहो।

५ अव्यय हो तो उसका भेद और अन्वय कहो।

उदाहरण। अहा! देवदत्त जो मेरे पिता का एक मित्र और प्राचीन सहायक है कल आया।

अहा!—अव्यय, आनन्दप्रकाशक विस्मयादिबोधक।

देवदत्त—संज्ञा, यौगिक, व्यक्तिवाचक, पुंलिङ्ग, एकवचन, 'आया' क्रिया का कर्त्ता कारक।

जो—सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, अन्यपुरुष, पुंलिङ्ग, एकवचन, 'है' क्रिया का कर्त्ता कारक; यह 'देवदत्त' इस संज्ञा के पलटे आया है।

मेरे—सर्वनाम, पुरुषबोधक, पुंलिङ्ग (यदि बोलनेवाली कन्या हो तो स्त्रीलिङ्ग), एकवचन, सम्बन्धकारक, इसका सम्बन्धी 'पिता' है।

पिता का—संज्ञा, रूढ़ि, जातिवाचक, पुंलिङ्ग, एकवचन, सम्बन्ध कारक, 'मित्र' और 'सहायक' से अन्वित।

एक—एकवचन, पुंलिङ्ग, संख्यावाचक विशेषण 'मित्र' और 'सहायक' संज्ञा का।

मित्र—संज्ञा, रूढ़ि, जातिवाचक, पुंलिङ्ग, एकवचन, 'है' क्रिया के 'देवदत्त' उद्देश्यरूपी संज्ञा का विधेयरूपी विशेषण।

और—अव्यय, समुच्चायक, 'मित्र' और 'सहायक' पदों का एकान्वय बोधित करता है।

प्राचीन—पुंलिङ्ग, एकवचन, गुणवाचक विशेषण 'सहायक' संज्ञा का।

सहायक—संज्ञा, यौगिक, भाववाचक, पुंलिङ्ग, एकवचन, 'है' क्रिया के 'देवदत्त' उद्देश्यरूपी संज्ञा का विधेयरूपी विशेषण।

है—क्रियापद, अकर्मक, कर्तृप्रधान, सामान्यवर्त्तमान काल, अन्यपुरुष, पुंलिङ्ग, एकवचन, 'हो' धातु का; इसका कर्त्ता 'जो' पद है।

कल-अव्यय, कालवाचक क्रियाविशेषण 'आया' क्रिया का।

आया—क्रियापद, अकर्मक, कर्तृप्रधान, सामान्यभूत काल, अन्यपुरुष, पुंलिङ्ग, एकवचन 'आ' धातु का, इसका कर्त्ता 'देवदत्त' है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों का पदान्वय लिखो—तुमने नहीं समझा कि मैं आज चला आऊंगा। मेरा कहना तुमने आज लो न माना। वह लड़का बहुत अच्छा पढ़ता है। धिक उसके पिता ने उसकी सहायता करने में संकोच किया। छी तुम अपने भाई के साथ चले गये होते। वह मूर्ख है। लड़का पागल हो गया। तुम ने भोजन क्यों त्याग दिया। मैं आया। दूधवाला मखनिया के हाथ दूध बेंचता है। जो हो वह नहीं मानता।

॥ इति ॥

BOOKS BY THE SAME AUTHOR.

		Rs.	As.	P.
1.	A Manual of Hindi Grammar ...	0	4	6
2.	The Elements of Hindi Grammar...	0	2	6
3.	The Child's Hindi Grammar ...	0	2	0
4	Hindi Grammar, Parts of Speech	0	0	6
5.	Moral tales (Hindi)	0	2	0
6.	Moral tales (Urdu)	0	2	0
7.	English-Hindi Primer	0	3	0
8.	English-Urdu Primer	0	3	0
9.	Tulsikrita Ramayana (Ajodhyakand)	0	6	0
10	Key to the above	0	10	0

ग्रन्थकर्त्तारचित और ग्रन्थों के नाम

१	हिन्दीबालबोधव्याकरण	।)॥
२	हिन्दीव्याकरणतत्त्वबोध	=)॥
३	शिशुबोधहिन्दीव्याकरण	=)
४	हिन्दी व्याकरण के मूल सूत्र	)॥
५	नीति की कहानियां (हिन्दी)...	=)
६	नीति की कहानियां (उर्दू)...	=)
७	अङ्गरेज़ी-हिन्दी प्राइमर	≡)
८	अङ्गरेज़ी-उर्दू प्राइमर	≡)
९	तुलसीकृत रामायण (अयोध्याकाण्ड) ...	।≡)
१०	" " " की टिप्पणी ...	॥≡)